ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 236 जून 2023

मेरा मुझमें कछु नाहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपते का लागे है मेरा ॥

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 236
जून2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रहिम श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	भारतीय किसान की विवशता और संघर्ष का विमर्श	डॉ. हंसराज चौहान	04
3.	Exploring Colonial Hindi Literature : Contesting Perspective	Dr. Amardeep	07
4.	मधुमेह टाईप 2 के रोगियों की फार्स्टिंग ब्लड शुगर (F.B.S.) पर यौगिक मुद्राओ एवं होम्योपैथी मदर टिंचर के प्रभाव का अध्ययन	डॉ. अशोक पचौरी (शोधर्थी) डॉ. ओम नारायण तिवारी (शोध निर्देशक)	12
5.	याक जाकोर का वध आदिवासी युवक-यू बकाइरखू के उत्कृष्ट जीवन संघर्ष की कहानी : एक मिथकीय व्यंजना	डॉ. श्रवण कुमार	17
6.	विश्व में बुद्ध	डॉ. रामहेत गौतम	21
7.	गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में कथ्य एवं शिल्प	डॉ. ओमप्रकाश सैनी	24

UGC Care Listed Journal
खाते का नाम - आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.- 63040357829
बैंक - भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा- फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।

अपनी बात

''आग लगी आकाश में झर–फर पड़े अंगार ।
जो संत न होते जगत में जल जाता संसार।।''

संत कबीर उस विशुद्ध मानवीय परम्परा के संत सम्राट थे जो जाति, धर्म, देश, और काल की सीमाओं से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र में आत्म जागरण का पाठ पढ़ाते हैं। उनके अनुयायियों में हिन्दू, मुस्लिम, पिछड़े, परिगणित और द्विजों की भरमार है क्योंकि वे जन से जुड़े, जनभाषा–भाषी, जनोपदेशक और जनोदधारक महामानव थे।

कबीर साहब मनुष्य की कथनी और करनी में साम्यता के पक्षधर थे। इसलिये वे कहते हैं–

जैसी कहे करै पुनि तैसी, राग–द्वेष निरवारे।
यामे घटै बढ़े रति हो नहि, या विधि सम्हर सम्हारै।।

संत कबीर का संपूर्ण सिद्धांत, विचार और चिंतन मनुष्य जीव के ही इर्द–गिर्द घूमता नजर आता है। वे कहते हैं –

पांच तत्व का पूतरा, मानुस धारिया नांव।
एक कला के बीछुरे, विकल होत सब ठांव।।

और वे योग, जप, तप, दान, दक्षिणा को मानव का कल्याणकारी नहीं मानते। इसलिये वे कहते है –

सहज, सहज सब कोई कहै, सहज न चीन्हें कोय।
जिहि सहजै बिषया तजै, सहज कहावे सोय।।
सहज सहज सब कोई कहै, सहज न चीन्हें कोय।
जिहि सहजै बिषया तजै, सहज कहावे सोय।।
सहज सहजै सब गये, सुत, वित कामनि काम।
एकमेक होय मिल रहा, दास कबीरा राम।।

कबीर की वाणी वास्तव में आज भी हमारे सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन के लिए मार्गदर्शन कर रही हैं।

संत कबीर ने अप्रिय सत्य को कहने में कभी हिचक नहीं दिखाई। उन्होंने मानव की समानता के आदर्श की प्रतिष्ठा के लिये तत्कालीन सभी प्रकार की सामाजिक विषमताओं पर पदाघात किया। घृणा के स्थान पर प्रेम और संघर्ष के स्थान पर समन्वय ही कबीर को इष्ट था। वे मानते थे कि –

सोहं हंसा एक समान। काया के गुन आनहिं आन।।
माटी एक सकल संसारा। बहु बिध भांड़े घड़ै कुम्हारा।।
पंच बरन दस दुहिए गाइ। एक दूध देखौ पति आई।।
कहै कबीर संसा करि दूरि। त्रिभुवन नाथ रह्या भरि पूरि।।

कहते और सुनते है कि मानव शरीर दुर्लभ है यह आत्मा नहीं पर आत्मा (चेतना) की कृति है। यह मुक्ति का मार्ग बन सकती है। इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि यह मानव शरीर अनुमूलन की पराकाष्ठा है, विधि की अमूल्य देन है। मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति भी कहा गया है। इस जीवन का कुछ न कुछ मूल्य है–इसे यों ही नष्ट नहीं कर देना चाहिए –

मानव जनम दुर्लभ है, बहुरि न दूजी बार।
पका फल जो गिरि परा, बहुरि न लागे डार।।

अपनी बंधन–मुक्ति और परमार्थ अथवा औरों की मुक्ति की साधना के लिए शरीर मिला है। सभी जीवों में एक ही प्राण है। अतः सब के सुख के लिये प्रयास होना चाहिए।

कहै कबीर कुछ उद्यम कीजै आप खाव औरो को दीजै।
जीव दया और आत्मपूजा, इन समदेव अवर नाहीं दूजा।।

अक्खड़ स्वभाव के फक्कड़ संत कबीर के बोल खरे खट्ट हैं, तभी तो वे सैंकड़ों साल बाद भी इतने ही अनमोल है। कबीर के नैतिक साहस से सल्तनत थर्राती थी और बादशाहत घबराती थी। कबीर सुविधा की राह के यात्री नहीं वरन् प्रेम की संकरी गली के पथिक है जिनके पांवों में छाले हैं किन्तु आंखों में प्रभु–दर्शन की आस और कंठ में प्रभु प्रेम की प्यास।

कबीर एक व्यवहारिक संत और गुरु है, जिनका काम घर में चरखा चलाकर जीविकोपार्जन करना और बाहर में सत्संग तथा प्रवचन करना है। घर–गृहस्थी में रहकर लोक व्यवहार के अनुभवों को परखना और उन पर तटस्थ भाव से टिप्पणी करना, मौज में आकर दुत्कार– फटकार और बुराइयों पर बिना लाग लपेट के खरी–खोटी सुना देना कबीर का स्वभाव है। सब कुछ झाड़–फटकार कर चल देने वाले कबीर ने इस बात की परहवाह नहीं की कि सुनने वाले पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। वे तो अपने राम में रमा है, अपने आप में मस्त।

अवधू मेरा मन मत वारा।
उन्मनि चढ़ा गगन–रस पीवे,
त्रिभुवन भया उजियारा।

– डॉ. तारा परमार

भारतीय किसान की विवशता और संघर्ष का विमर्श

– डॉ. हंसराज चौहान

भारत और समूची दुनिया में प्रत्येक काल में किसानों पर अत्याचार होते रहे हैं और किसान संघर्ष और विद्रोह करते रहे हैं। भारत में मुगलकाल के उत्तरार्द्ध में किसानों के विद्रोह जोर पकड़ने लगे थे जो अंग्रेजी शासन के दौरान मजबूत होकर उभरे और राष्ट्रवाद की आजादी के आंदोलन की नींव तैयार करने में इन किसान आंदोलनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही ।

सन् 1874 में दक्कन विद्रोह, 1872 का कूका विद्रोह, 1879–1922 तक का रामोसी किसान विद्रोह, 1847 से लगभग 1900 तक चलने वाला बिजोलिया किसान आंदोलन, 1919 का एका आंदोलन, 1920 का मोपला विद्रोह, 1946 का तेभागा आंदोलन, 1946 का तेलंगाना आंदोलन, 1859 से 1948 तक का नील (चंपारण) विद्रोह, 1918 का खेड़ा सत्याग्रह, 1928 का बारदोली सत्याग्रह आदि अंग्रेजी दासता के समय भारत के प्रमुख किसान विद्रोह रहे हैं।

आजादी के बाद किसानों की दशा में सुधार के प्रयास शुरू हुए और किसानों को अपने जीवन में विकास की संभावनाएँ दिखने लगी किन्तु समय के साथ प्रशासनिक व राजनैतिक उदासीनता के चलते कृषि व किसानों का विकास तथा उद्धार सही मायनों में उस अनुपात में नहीं हो पाया जिस अनुपात में होना चाहिए था ।

आजाद भारत में भी किसान अपने अधिकारों के लिए आंदोलनरत रहे हैं लेकिन 2020 के अंतिम महीनों में केन्द्र की सरकार द्वारा बनाये गये और लागू किये गये 3 कृषि कानूनों को 'काले कानून' कहकर किसानों ने राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होकर एक ताकतवर आंदोलन शुरू किया।

2022 आते–आते केन्द्र सरकार इस भयंकर और प्रभावी आंदोलन के सामने झुकी और तीनों कृषि कानून रद्द कर दिये गये। इस घटनाक्रम में किसानों के जीवन, समस्याओं और तमाम दशाओं के वर्तमान तथा भविष्य की बहस को नये सिरे से जन्म दिया । भारत के किसानों की तमाम विपरीत परिस्थितियों पर साहित्यकारों ने प्रायः मार्मिक और प्रभावी चित्रण किया है। कवियों ने तो किसान वर्ग की पीड़ा को गहराई से समझा है और उकेरा है। लीलाधर मंडलोई की कविता 'उसका मरना' एक गरीब किसान की मौत के बाद की मार्मिक और विचलित करने वाली दशाओं का बयान है :

मरने को यूँ रोज मरते हैं लोग
उसका मरना
बर्दाश्त की सीमा के बाहर
जब वह मरा
तीन जवाने अपंग बेटियाँ
उसके सहारे
बड़ी हो रही थीं।[1]

कृषक को निरन्तर अनथक संघर्ष करना पड़ा है और पीढ़ी–दर–पीढ़ी उसकी व्यथा और परेशानियाँ बढ़ती गई है। कृषक का साहस ही है, जो उसे इन विपरीत हालातों से निकलने में मदद करता है ।

चंद्रकान्त देवताले की कविता 'जो नहीं होते धरती पर' इन्हीं हालात को दर्शाती है –

'जो नहीं होते धरती पर
अन्न उगाने पत्थर तोड़ने वाले अपने
तो मेरी क्या बिसात जो मैं बन जाता आदमी।'[2]

किसान अपने जीवन की तमाम पूँजी और भावनाएँ लगाकर अपने खेत और परिवार को संवारता है लेकिन पूरे देश का पेट भरने वाला किसान ही प्रायः भुखमरी और कुपोषण की दशा में आ जाता है और अपने बच्चों का पालन–पोषण तक ढ़ंग से नहीं कर पाता है। किसान का बेटा नौकरी की खोज में शहर जाता है और

या तो असफल हो जाता है या सफल होकर शहर की चकाचौंध भरी गलियों में जैसे कहीं खप सा जाता है। कभी–कभार त्यौंहार की तरह जब वह लौटता है तो गाँव और उसका अपनापन उसके अंतस की उजास को प्रकट कर डालता है ।

चंद्रकान्त देवताले की कविता 'गाँव तो थूक नहीं सकता था मेरी हथेली पर' में इसी प्रकार की अभिव्यक्ति है –

'अपने पेड़ के कालू आम का स्वाद
आज चालीस साल बाद भी मेरी जुबान पर
इस तरह बसा है जैसे
चूसकर निकाली
बिन रेशे वाली पतली गुठली मेरे हाथ में है।[3]

किसान के लिए हर मौसम एक चुनौती होता है और हर त्यौहार एक जिम्मेदारी। शादी–ब्याह उसके लिए किसी परीक्षा से कम नहीं होते। सत्ताओं ने किसान को जितना सताया और प्रताड़ित किया है, उसके मुकाबले मौसम को अधिक बेरहम कहना तो जैसे गुनाह ही माना जाएगा। हिन्दी के क्रांतिकारी कवि सुदामा पंडित धूमिल किसानों की अथाह पीड़ा और आर्तनाद का विमर्श इन शब्दों में अभिव्यक्त करते है –

'भूख कौन उपजाता है
वह इरादा जो अवसर देता है
या वह घृणा जो आँखों पर पट्टी बाँधकर
हमें घास की सट्टी में छोड़ आती है।'[4]

किसान अपने अधिकारों और अस्तित्व के लिए लड़ते–लड़ते किसान से मजदूर और मजदूर से मजबूर हो जाता है लेकिन सत्ताएँ और तंत्र उस पर किसी तरह का रहम नहीं खाते हैं। किसान अपने हक के लिए घर–बार छोड़कर, खेत और परिवार को संकट और विकट दशा में डालकर आंदोलन के लिए सरकारों की चौखट पर आकर डंडे खाता है और निर्मम सत्ताएँ उसे व्यवस्था के लिए खतरा बताकर 'राष्ट्र विरोधी' का ठप्पा लगाने लगती हैं। वास्तव में सत्ताएँ खुद को देश का मालिक मान बैठी है और 'जनसेवा' एक भद्दा मजाक बनकर रह गया है। सुभाषचन्द्र कुशवाहा अपने आलेख 'किसान आन्दोलन : इतिहास, वर्तमान और भविष्य' में लिखते हैं – 'पहले तालुकेदारों द्वारा बेदखली कर जमीनें हड़पी जाती थीं । आज बड़े–बड़े कॉर्पोरेट उनकी जमीनों पर गिद्ध दृष्टि लगाए बैठी है। पहले राजे–महाराजाओं के गोदाम, किसानों के अन्न से भरे रहते थे और किसान अकाल की मार मरते थे। आज कॉर्पोरेट को जमाखोरी का असीमित अधिकार देकर सरकार असीमित भंडारण की छूट दे रही है, जो खाद्यान्न सुरक्षा को खत्म कर, किसानों को दास बनाकर बंधुवा मजदूरी करायेंगे।'[5]

किसान की लम्बे समय से जो हालत रही है वह बंधुआ मजदूरी से कम नहीं है। कभी उसे फसल पैदा करने के लिए पर्याप्त धन और साधन नहीं मिलते, कभी मौसम धोखा दे जाता है और सरकारों की बेरूखी इन सबसे अधिक विचलित करने वाली है। जिस तरह मरीज से उसका मर्ज पूछकर उसे दवा दी जाती है, इलाज किया जाता है, उसी तरह किसान से उसकी समस्याएँ और चुनौतियाँ जान–समझकर कानून और नियम बनाये जाने चाहिए जिससे किसानों का वास्तविक विकास और वृद्धि, समृद्धि संभव हो सके।

देश की अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान देने वाला, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों की समझ और व्यवहार रखने वाला, संविधान और तंत्र की पालना करने वाला किसान उपेक्षित और ठगा–सा महसूस करता है तो ये उन सत्ताओं के मुँह पर तमाचा है। उस नेतृत्व पर कालिख है जो किसान के विकास के मुद्दे पर सत्ता में आ तो जाते हैं लेकिन किसान के आर्तनाद को अनसुना कर देते हैं ।

किसानों के नाम पर योजनाएँ और नीतियाँ तूफान की तरह आती है और किसानों को सपने दिखाकर मायूसी का अंधड़ छोड़ जाती है। किसान के जीवन में कोई आमूलचूल परिवर्तन नहीं होता और वह इतना

स्वाभिमानी होता है कि किसी के आगे हाथ फैलाने की बजाय ईहलीला समाप्त कर लेता है। वास्तव में किसान का मजबूर होकर आत्महत्या करना आत्महत्या नहीं... सत्ता द्वारा की गयी हत्या ही है। कॉर्पोरेट घराने नये युग के सामंत हैं जो किसानों का सर्वस्व हड़प लेने पर आमादा दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है जैसे 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' अपना भारतीयकरण कर सामने आकर खड़ी हो गई है ।

किसान आजादी के बाद अनेक बार दिल्ली की चौखट पर आकर लौटा है। अपने साथ हो रहे अन्याय के विरूद्ध रोक लगाने का प्रयास करता रहा है लेकिन कॉर्पोरेट घरानों और नौकरशाही की आदमखोर नीयत ने किसान के अस्तित्व को जैसे निगलने की तैयारी कर डाली है ।

शमशेर बहादुर सिंह अपनी कविता 'अकाल में लिखते हैं'

'भूख
अनाज
मुनाफाखोर
अनाज चोर का
बिलकुल छिपा–सा निर्जन में
अंधेरा बाजार।'[6]

किसान वर्ग के लिए अनुकूल और बेहतर नीतियां बनायी जानी जरूरी हैं, जिसमें किसान के जीवन में सुधार हो सके । किसान का बेटा ही प्रायः भारतीय सीमाओं की रक्षा करने वाला सैनिक बनता है और किसान का परिवार 'जय जवान–जय किसान' के नारे को चरितार्थ करता प्रतीत होता है । हालांकि ऐसे प्रसंग भी है कि किसान को अपनी अति सामान्य जीवन–शैली स्पष्ट शब्दों में गरीबी के कारण अपनी ही संतानों की उपेक्षा और नाराजगी भी झेलनी पड़ती है । किसान की बेरोजगार औलाद को लगता है कि खेती–किसानी फालतू का काम है और ये उसे 'बोदा' या 'गंवार' ही सिद्ध करेगा । कितनी पीड़ा की बात है कि किसानी जैसे स्वाभिमानी पेशे को भी हेय दृष्टि से देखने की मानसिकता विकसित हो गयी है । किसान को समाज और व्यवस्था उचित आदर नहीं देते और उसे व्यवस्था के धक्के खाने पड़ते हैं। किसान के नाम पर वोट मिलते हैं, संस्कृति के अध्याय लिखे जाते हैं, नारे गढ़े जाते हैं, उनका नाम लेकर चर्चाएँ और विमर्श होते हैं, बहसें होती हैं लेकिन भौतिक रूप से, व्यवहारिक रूप से किसान की हालत में सुधार नहीं होता। ये विडंबना और विरोधाभास किसान को इस बात पर सोचने के लिए मजबूर करने लगता है कि कृषि का पेशा सही है या नहीं ?

किसान की अपनी संतानें भी जब उसके इस परम्परागत कार्य से किनारा कर दूर भागने लगती हैं तो किसान का मन अंदर ही अंदर आर्तनाद करने लगता है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अपनी कृषि कविता 'रंग तरबूजे का' में इसी दुःखद स्थिति का बयान करते हैं –

'गोड़–गाड़कर खेत बनाया
उसमें डाली खाद,
जब बोने का मौसम आया
भाग गयी औलाद।'[7]

भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ जब बनती है तो गाँधीजी की उस बात को हमेशा याद रखकर घोषणाएँ की जाती है कि 'भारत कृषि प्रधान देश है।' ... लेकिन किसान के जीवन की जमीनी हकीकत कुछ और है... और वह 'कुछ और' अधिक भयावह है ।

योजनाकार और आलोचकों की नजर में किसान की परिभाषा मिट्टी से सना शरीर और फटे– पुराने कपड़े, कर्ज, मजबूरी और मुफलिसी की जिंदगी है। किसान की संपन्नता उन्हें रास नहीं आती । ऐसा लगता है जैसे संपन्न किसान उनकी नजर में अपराधी है और वह संपन्नता के योग्य नहीं है । किसान अपने जीवट, परिश्रम और आत्मबल से यदि स्वयं के जीवन को बेहतर बना भी ले तो उसकी ये स्थिति समाज के लिए 'अपच' पैदा करती है। केदारनाथ सिंह की कविता 'अकाल में

दूब' किसानों के मनोविज्ञान, पीड़ा और प्रताड़ना के साथ–साथ उनकी विवशता को भी उकेरा गया है –

'कहते हैं पिता
ऐसा अकाल कभी नहीं देखा
ऐसा अकाल कि बस्ती में
दूब तक झुलस जाए
लौटता हूँ निराश।'[8]

इस तरह की दुर्दशा को झेलता किसान भौतिक और मनोवैज्ञानिक मोर्चों पर आजीवन संघर्ष करता रहता है और लोगों के लिए कभी वह प्रेमचंद का 'होरी' बन जाता है या कभी 'दो बीघा जमीन' का शम्भू... बस वह अपने पास के गाँव का... अपने देश–प्रदेश का किसान नहीं बन पाता जो कल्पना से परे कटु यथार्थ को ओढ़कर–बिछाकर जीवन के थपेड़े झेलता हुआ जीता रहता है।

सरकारों के साथ तथाकथित 'सभ्य' कहे जाने वाले समाज को भी किसान के प्रति वास्तविक हमदर्दी दिखाकर उसे उद्धार तथा विकास की स्थिति में लाने के अथक प्रयास करने होंगे। किसान को भी व्यापारी से अधिक नहीं तो व्यापारी के बराबर समझकर उसे आदर –इज्जत देनी होगी। तभी किसान अपने आप का अस्तित्व बचा पाएगा और देश का पेट भरने में सदियों की तरह सहयोग करता रहेगा।

किसान को उसकी फसल का उचित मूल्य मिले, सरकारी तौर पर उन्नत और संवद्धित खेती के लिए व्यापक समर्थन मिले और ये सारे काम केवल कागजों या विज्ञापनों में ना होकर वास्तविक धरातल पर हों तो भारत का विकास और उन्नति संभव हो सकेगी।

– डॉ. हंसराज चौहान
सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
होद, सीकर–332715 (राजस्थान)
मो. 9928440405

संदर्भ :

1. भीजै दास कबीर – लीलाधर मंडलोई, पृष्ठ 78, वाणी प्रकाशन, 2016, प्रथम संस्करण।
2. प्रतिनिधि कविताएँ – चंद्रकांत देवताले, पृष्ठ 17, राजकमल प्रकाशन
3. प्रतिनिधि कविताएँ – चंद्रकांत देवताले, पृष्ठ 100, राजकमल प्रकाशन।
4. अकाल दर्शन–संसद से सड़क तक – सुदामा पांडेय धूमिल, पृष्ठ 18, राजकमल प्रकाशन, 2013, पहला संस्करण।
5. हिन्दी बुनियाद (द्वैमासिक पत्रिका, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी), अगस्त–सितम्बर 2021, किसान आंदोलन, पृष्ठ 11
6. चुका भी हूँ मैं नहीं – शमशेर बहादुर सिंह, पृष्ठ 95, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2019, चौथा संस्क 7. प्रतिनिधि कविताएँ – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, पृष्ठ 139, राजकमल प्रकाशन, 2021, सोलहवाँ संस्करण।
8. प्रतिनिधि कविताएँ – केदारनाथ सिंह, पृष्ठ 40, राजकमल प्रकाशन, 2020, पहला संस्करण।

Exploring Colonial Hindi Literature : Contesting Perspectives

- Dr. Amardeep

A study of ancient India shows that history and literature were closely related with each other. Ancient manuscripts, epics, and other forms of literature played crucial role in the writing or construction of Indian history. This paper deals with an exploration into colonial Hindi literature, especially, some famous writings of Munshi Premchand and Swami Acchutanand. Hindi literature

in the twentieth century straddled two analytically distinct public spheres. One belonged to the mainstream Hindi writers and the other was created by Dalit writers. In this paper, I have focused on the work of mainstream caste Hindu Hindi writers who dwelt on untouchables and their conditions. Many celebrated Hindi writers, including Premchand, have been discussed here as a contrast to Dalit literary figures. This paper is divided into two sections. The first section deals with various themes in the mainstream Hindi literature and I argue that while these display sympathy towards Dalits, they do so as part of an attempt to counter the influence of the Adi Hindu movement.[1] Secondly, it was part also of an effort to incorporate Dalits within the ambit of a greater 'Hindu' identity through Shuddhi (purification) programmes. Gandhian notion of the 'Hridya Privartan' was a dominant feature of these writings. Dalits were not presented as agents of change in this literature; rather their poor conditions and helplessness treated as an insurmountable obstacle was a characteristic feature of the mainstream Hindi literature.

(I)

There is no doubt that Premchand was the first prominent upper caste writer who, moved by the plight of Dalits, gave them a literary voice. Despite this, Dalit writers did not consider his work as a part of the Dalit literature. Dalits considered that Premchand's literature was written in a sympathetic mode. The background of a powerful nationalist drive-informed by, as we saw earlier, a desire to 'lift' Dalits - behind his literature cannot be seen as altogether unproblematic. Elaborating on this point, Kanwal Bharti writes that the "basis of Dalit literature is the philosophy of Dr. Ambedkar who demanded abolition of caste and Varna system. Brahmanism was his enemy. On the other hand, Premchand was a Gandhian who believed in the Varna order.... Unfortunately, Premchand was a writer of that kind whose love for the Dalit is limited to removal of untouchability only."[2] Dalit writer Omprakash Balmiki says that "Premchand wrote many stories about Dalit awareness like 'Sadgati' (The Deliverance), 'Thakur ka Kuwan'

(The well of Thakur), 'Dudh ka Dam' (Price of Milk)... He was influenced by the ideas of Gandhi. There is a dilemma in his writings. On the one hand, he has sympathy with Dalits. On the other hand, he shows his belief in the Varna system."[3]

Premchand has been praised by upper castes writers, Sadanand Shahi and others, for his famous story 'Kafan' (The Shroud). They explained that Premchand has brought out all the sorrows of the Dalits. But Dalit writers do not consider it a story of Dalits; rather they declared it an anti-Dalit story.

According to the story, Ghisu and his son Madhav were good for nothing Chamars, the kind that would suffer hunger but would not work for a living. On the day Madhav's wife Budhiya was crying with delivery pain, father and son were busy roasting potatoes. Both thereafter ate the roasted potatoes and went off to sleep. In the morning, Madhav found that his wife had passed away and her unborn child too had died in her womb. They went to the Zamindar and to villagers to collect some money for her final rites. They collected five rupees and went to city to buy Kafan. But they did not buy the Kafan; rather they drank alcohol and ate their fill. They both began to dance..... overcome by drunkenness, they collapsed.[4]

Kanwal Bharti argues that in this story "Premchand is making a mockery of Dalits. Premchand is giving the massage that poverty is the major problem of Dalits. It is only poverty which had bred many evils among Dalits and inhuman persons like Ghisu and Madav. But Premchand forgets that the Varna system and unequal distribution of the resources was the major sources of the problems of Dalits. Why did he not explore this aspect behind their laziness?"[5] But Sadanand Shahi, a non- Dalit writer, argues that influence of Dr. Ambedkar had not yet reached Eastern UP, where Premchand lived. Rather, this story shows the influence of Kabir on Ghisu. Ghisu said that “Isn't this Kafan too burnt with the dead body? What is left? If [we had] got these five rupees earlier then [we] would bring medicine for her."[6]

Premchand has certainly shown the 'degraded' conditions of Chamars. But

he bypassed the reasons behind it. Why exactly did the Chamars devote such obsessive attention to food even as a human being lay struggling with death in an adjacent room? It was the feudal system and the caste system which were responsible for the 'inhuman' behaviour of Ghisu and Madhav. There was no higher 'human' value invested in the untouchables; they had been normatively reduced to a poor and low status which produced no elevated 'human' concerns. Caste had convinced them that there would be no change in their position, no matter how hard they worked. The social order denied them any option of social and economic upward mobility.

(II)

There was no change in the lives of caste Hindus; there was no feeling of repentance among them. There was no sign of the Gandhain Hridya Parivartan among caste Hindus. It seems that Premchand had accepted the reality that there would be no change in the caste Hindu mentality. Guru Prasad Madan, a Dalit writer, argues that it was on account of the impact of the Adi Hindu movement on Premchand that he wrote about untouchables. Premchand incidentally had been living in an area where the Adi Hindu movement recorded a marked progress.[7] We did not find a sense of change or, sometimes, a feeling of revolt which was common in the Dalit literature when Premchand and other caste Hindu writers were writing literature. For example, here an example is noteworthy to mention from the writings of Swami Acchutanand (1879-1933) who belonged to the first generation of Dalit writers.

Tum kab chetoge,
Shudro-Neech kahane walon.
Jaha tum karte boodon batein,
Hai ye desh tumhara tha.
Dekho zara khol itihaas,
Dasyu-Aryon ke yuddh nikalo.
Tum kab chetoge,
Shudro-Neech kahane walon.
Swami Acchutanands[8]

When will you awaken, oh Shudras and untouchables? There was a time when you used to speak with authority, when this country was yours./ only open the history books, particularly the chapter on the war between the Dasyus (original inhabitants) and Aryans

(foreigners) and the picture will be right before your eyes/ When will you awaken oh Shudras and untouchables?[9]

The verse is part of Bhajan no. 23 in the first booklet by Swami Acchutanand. It claims that the untouchables (Neech) and the Shudras were the original inhabitants of India and their history could be traced as far back as the war between the Dasyus and the Aryans. Here is, thus, an obvious example of what I have called Dalit literature setting itself, and consciously performing, the task of raising the consciousness of untouchables and investing them with pride and self-belief through instilling in their minds a discourse of 'right' origin as the final arbiter of a rightful claim to territorial nationality.

It is noteworthy to mention that Premchand and others did not produce that kind of literature. But this excerpt documents a very inchoate, but clearly formative, moment of Dalit consciousness, as it were; one where this intellectual leadership was seized of the need to raise the consciousness of their brethren but was still only beginning to seriously work out a vocabulary of protest.

Conclusion:

Literature has a very important and foundational role in the construction of self- respect for any community. In early twentieth century, the same role was played by Dalit literature in formulating the new Dalit identity. At the same time, some caste Hindu writers, including Premchand, have thrown lights on the lives of low castes and untouchables. They discussed various issues with regard to temple entry, plight conditions of untouchables, etc. But they did not portray the real reasons behind their exploitation and inhuman lives: the Varna system and unequal distribution of resources. They did not consider them as an agent of change rather believed in the Gandhian notion of Hridya Privartan. But Dalit writers were not satisfying merely portrayal of Dalits in mainstream Hindi literature. They were looking for emancipation, freedom and more importantly for self-respect. Therefore, they denied the literature produced by caste Hindu writers. They considered that the literature written by Dalits can lead them their desired goal i.e. Self-Respect and Freedom.

- Dr. Amardeep
Assistant Professor of History
Govt. College Birohar (Jhajjar) Haryana
Mob. 9466960340

References :

1. This movement was started by Swami Acchutanand in 1922 in Delhi. The movement claimed that the low castes had a golden past in pre-Aryan period and they were the original inhabitants of India.

2. Kanwal Bharti; "Dalit Sahitya aur Premchand" in Sadanand Shahi (ed.) Dalit Sahitya ki Avadharana aur Premchand, Gorakhpur: Premchand Sahitya Sansthan, 2000, pp. 93-94

3. Ibid., pp. 87-88

4. This story was first published in Urdu (1935) then Hindi (1936). Zabir Hussain (ed); Premchand Rachanavali-Part XV, Delhi: Janvani Prakashan Pvt. Ltd., 1996, pp. 401-07

5. Kanwal Bharti; "Dalit Sahitya aur Premchand" in Sadanand Shahi (ed.) Dalit Sahitya ki Avadharana aur Premchand, Gorakhpur: Premchand Sahitya Sansthan, 2000, p. 89

6. Sadanand Shahi; "Kya Kafan Dalit Virodhi Kahani Hai?" in Sadanand Shahi (ed.) Dalit Sahitya ki Avadharana aur Premchand, Gorakhpur: Premchand Sahitya Sansthan, 2000, pp. 102-03

7. Personal Interview with Guru Prasad Madan (age 69) Allahabad on January 30, 2012 at 7:30 am

8. Swami Acchutanand: Harihar Bhajan Mala: Bhagh 1, Agra, 1913 (available in the personal library of Guru Prasad Madan, Dalit writer and publisher, Allahabad, UP)

9 Translation mine from Hindi

मधुमेह टाईप 2 के रोगियों की फासिंट ब्लड शुगर (F.B.S.) पर यौगिक मुद्राओं एवं होम्योपैथी मदर टिंचर के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. अशोक पचौरी (शोधार्थी)
डॉ. ओम नारायण तिवारी (शोध निर्देशक)

डायबिटीज मेलेटस (डीएम) जिसे मधुमेह कहा जाता है, यह चयापचय संबंधी बीमारियों का एक समूह है। जिसमें रक्त शर्करा उच्च स्तर पर होती है, इस कारण पैशाब का बार–बार आना होता है तथा प्यास की वढोतरी होती है और भूख में भी वृद्धि होती है। उच्च कैलोरी युक्त भोजन और गतिहीन आलसी दिनचर्या मधुमेह के प्रमुख कारण हैं ।

प्रकार – मधुमेह के मुख्य प्रकार और उनके लक्षण निम्नांकित है।

टाईप 1 मधुमेह : यह 10–20% लोगों में पाई जाती है। मधुमेह की यह अवस्था इन्सुलिन उत्पन्न करने वाली कोशिकाओं के विघटन हो जाने के कारण उत्पन्न होती है

लक्षण :–

(1) इसमें इन्सुलिन की आवश्यकता होती रहती हैं

(2) यह मुख्यतयः बच्चों और वयस्कों में होती है (40 से कम आयु वर्ग)

(3)इसकी उत्पत्ति आकस्मिक होती है

(4) इसमें कभी संक्रामक रोग, दर्द, वजन कम होना शामिल हैं।

टाईप 2 मधुमेह :– यह मुख्य रुप से वयस्कों में 80–90% पाई जाती है

लक्षण :–

(1) अत्याधिक भूख लगना

(2) अत्याधिक प्यास लगना

(3) अत्याधिक पेशाब लगना

(4) वजन कम होना

(5) जी मिचलाना

(6) आंखों में चकाचौंध होना

(7) हमेशा थका हुआ महसूस करना

(8) संक्रमण की अधिक संभावना

मधुमेह की आहट :– निम्नांकित पूर्व संकेतो से मधुमेह रोगियों को पहचाना जा सकता है जिसे मधुमेह की आहट कहते हैं।

(1) हाथ पैरों में जलन

(2) मुख स्निग्धता

(3) गुरुता की क्रियाशीलता

(4) मूत्र का मधुर और सफेद रंग का होना

(5) आलस्य

(6) अत्याधिक तृष्णा

(7) दुर्गन्धता

(8) दांतों पर मैंल का जमना

(9) नखवृद्धि

(10) अत्याधिक गंदेले मूत्र का बार–बार आना

(11) गर्दन के पीछे त्वचा पर काला दाग जो साफ नहीं होता है।

(12) पलकों के पास पीले पैच का होना

(13) हाथ की उंगलियों की चमड़ी मोटी होना

(14) कोहनी और कांख के पास त्वचा का रंग गहरा होना

(15) चिड़चिड़ाहट होना

निदान : मधुमेह के निदान हेतु निम्न परीक्षण किये जाते हैं ।

(1) रक्त परीक्षण :– प्लाज्मा में ग्लूकोज का स्तर पता करने हेतु एफबीएस ,पीपीबीस, आरबीएस

(2) मूत्रपरीक्षण :– मूत्र में ग्लूकोज, प्रोटीन, कीटोन की मात्रा तथा कोशिकाओं की उपस्थिति जांचने हेतु सूक्ष्मदर्शी परीक्षण

(3) मधुमेह का प्रभाव परीक्षण :–

(1) एचबी, ए1 सी :– रोग किस चरण में है और उसके उपचार का निर्धारण करने हेतु परीक्षण।

(2) **लिपिड प्रोफाइल** :– कोलस्ट्रॉल, ट्राईग्लिसराईड, एलडीएल, एचडीएल का स्तर पता लगाने हेतु परीक्षण।

(3) **रक्त यूरिया** :– सीरम क्रिएटिनिन आदि का परीक्षण।

(4) **ई. सी. जी.** – हृदय परीक्षण हेतु।

(5) **फण्डस**:– नेत्र परीक्षण हेतु

मधुमेह रोगियों हेतु आहार विहार :–

अपथ्य कारक आहार :– शक्कर, मिठाईयां आइसक्रीम, मीठे बिस्कुट, शहद, कोल्ड्रिंक्स, आलू, अरबी, वैगन, समस्त कंद, उड़द दाल, मांस, मदिरा शराब, बीडी, सिगरेट, गुटखा, तम्बाकू, डिब्बा बंद आहार, अचार, मुरब्बा, भैंस का दूध, काजू, मूंगफली पिण्ड खजूर, अंजीर मुनका आदि।

पथ्य कारक आहार :– जौ और मिक्स आटे की रोटी, चना मूंग अरहर कुलथी की दाल, लोकी, परवल तोराई, टिंण्डा, रागी, समा, मौसमी फल, पालक, बथुआ, मैथी की भाजी, करेला, छाछ, मढढआ का सेवन करना चाहिए। कैथ, लहसुन की चटनी, नींबू का अचार, फीका दूध, जौ का दलिया आदि सेवन करना चाहिए ।

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य मधुमेह के टाईप 2 से पीड़ित रोगियों पर योग और होम्योपैथी के प्रभाव का अध्ययन यौगिक मुद्राओ के विशेष संदर्भ में ज्ञात करना है ।

1. मधुमेह के उपचार में नए विकल्प की प्रासंगिकता खोजना ।

2. मधुमेह के उपचार में प्रयुक्त होंने वाली मुद्राओं की विवेचना व महत्व स्थापित करना ।

3. रोगी को योग का महत्व समझाना और ततसंबंधी उचित कार्यक्रम तैयार करना।

4. मधुमेह के उपचार में प्रयुक्त होंने वाली योग मुद्राओं की उपुक्तता निधार्रित करना।

5. योग के चिकित्सात्मक स्वरूप एवं सिद्धांतों की पुर्नस्थापना करना ।

6. योग की स्वास्थ्य संबंधी अवधारणाओं का

विश्लेषण करना ।

7. रोगी को मधुमेह के विषय में उचित ज्ञान एवं प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत करना, ताकि रोगी सामान्य और सक्रिय जीवन जी सके।

परिकल्पना :– प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पना यह है कि प्रायोज्यों के मधुमेह टाईप 2 पर योग मुद्राओ और होम्योपैथी औषधि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है

न्यायदर्श :– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रायोज्यों न्यादर्श के रूप में जिला भोपाल म.प्र. के शा, होम्योपैथी औषधालय/चिकित्सालय कबीटपुरा भोपाल के (50+50) कुल 100 मधुमेह रोगियों का चयन कर उनके दो समूह बनाये गये है। जिसमें नियंत्रित समूह एवं प्रायोगिक समूह के रुप में क्रमशः 100 रोगियो का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है।

1. शोध विधि :– न्यायदर्श के रूप में चयनित किये गये, प्रायोज्यों को निर्धारित विधि तंत्र के अनुसार कार्य रूप दिया गया है तथा मधुमेह रोगियों के दो समूह वनाये गये है प्रत्येक समूह में 50 मधुमेह रोगियों को रखा गया है। जिसमें एक समूह को नियंत्रित समूह और दूसरा प्रायोगिक समूह है। प्रायोगिक समूह के रोगियों को चयनित योग मुद्राओं का अभ्यास कराया गया है तथा होम्योपैथी मदर टिंचर साइजेजियम जमवोलिकम की 20 बूंद 1/2 कप पानी के साथ सुबह शाम सेवन कराईं गई है तथा नियंत्रित समूह के रोगियों को न तो चयनित मुद्राओं का अभ्यास कराया गया है ओर न ही होम्योपैथी मदर टिंचर साइजेजियम जमवोलिकम का सेवन करवाया गया है मात्र औषधि के नाम पर Placebo दी गई है दोनों समूहों के रोगियों का प्रत्येक तीन–तीन माह पर परीक्षण पूर्व एवं पश्चात (एफ. बी. एस). फास्टिंग ब्लड शुगर का परीक्षण किया गया तथा परीक्षणों से प्राप्त आंकड़ों का सारणीयन कर सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है एवं विश्लेषण तालिका क्र. (4.1 एवं 4.1.2) के आधार पर प्राप्त परिणामों से शोध के निष्कर्ष प्राप्त किये गये है :

परिणाम : उक्त प्रसारण तालिका (एनोवा टेविल) कमांक 4.1 एवं 4.1.2 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रायोगिक समूह एवं नियंत्रित समूह के मधुमेह रोगियों के पूर्व एवं पश्चात परीक्षण के आधार पर उनके फासिटंग ब्लड शुगर 'खालीपेट' (एफ बी एस) पर योग मुद्राओं और होम्योपैथी मदर टिंचर के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है ।

प्राप्त सांख्यिकी विश्लेषण से ज्ञात होता है कि प्रायोगिक समूह के मधुमेह रोगियो के पूर्व परीक्षण का मध्यमान 175.1 तथा मानक विचलन 27.8 प्राप्त हुआ है।

जबकि इसी समूह के परीक्षण पश्चात मध्यमान क्रमश पश्चात 1,2,3, के 149. 6,132.8,एवं 109.9 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.6,15.6, एवं 16.2 प्राप्त हुए हैं। इसी तरह नियंत्रित समूह के मधुमेह रोगियों का पूर्व परीक्षण का मध्यमान 149.1 तथा मानक विचलन 10.6 प्राप्त हुआ है, जबकि इसी समूह के मधुमेह रोगियों का परीक्षण उपरांत मध्यमान क्रमशः पश्चात 1,2,3 के 151.3, एवं 154.1, एवं 157.7 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.2,10.9, एवं 11.9 प्राप्त हुए हैं।

दोनों समूहों के मध्यमान वर्ग 18299.5174 तथा 291.0895311 है। सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त एफ अनुपात का मान 62.86559783 प्राप्त हुआ है, जो सार्थकता के निर्धारित मान 2.685 से अधिक है।

अतः कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के मधुमेह रोगियों को प्रत्येक 3 माह के अन्तराल पर योग मुद्रा अभ्यास और होम्योपैथी मदर टिंचर का सेवन कराया गया ।

अभ्यास के पूर्व लिये गए परीक्षण एवं अभ्यास उपरांत लिए गए परीक्षण से यह सिद्ध होता है कि योग मुद्राओ एवं होम्योपैथी मदर टिंचर का मधुमेह रोगियों की फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) को प्रभावित करता है। जबकि नियंत्रित समूह के मधुमेह रोगियों के पूर्व एवं पश्चात परीक्षण का फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) में कोई विशेष भिन्नता नहीं देखी गई है।

अतः परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के अभ्यास पूर्व एवं पश्चात परीक्षण के आधार पर यह देखा गया है कि योग मुद्रा अभ्यास एवं होम्योपैथी मदर टिंचर के उपयोग से मधुमेह रोगियों के फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) में अंतर आया है। अर्थात अभ्यास के पूर्व उनकी फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) अधिक थी और अभ्यास उपरांत अर्थात प्रत्येक तीन माह के पश्चात उनकी फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) में निरन्तर कमी देखी गई है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्य और परिकल्पना के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण के उपरांत प्राप्त परिणामो से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिन रोगियों को योग मुद्रा अभ्यास एवं होम्योपैथी मदर टिंचर का सेवन नहीं करावाया गया उनकी तुलना में जिन रोगियों को योग मुद्रा अभ्यास एवं होम्योपैथी मदर टिंचर का सेवन करवाया गया उनकी फासिटंग ब्लड शुगर (F.B.S.) कम प्राप्त हुई है । इस प्रकार परिणाम यह दर्शाता है कि कि मधुमेह के प्रबंधन में योग मुद्रा अभ्यास एवं होम्योपैथी मदर टिंचर साइजेजियम जमवोलिकम का उपयोग सार्थक पाया गया है।

अध्ययन का महत्व :– शोध अध्ययन द्वारा देखा गया है कि योग मुद्राओं का अभ्यास नहीं करने वाले रोगियों की ब्लड शुगर की तुलना में योग मुद्राओं का अभ्यास करने वाले रोगियों की ब्लड शुगर पर योग मुद्राओं का सार्थक प्रभाव पड़ता है मधुमेह रोगियों को योग मुद्राओ का नियमित अभ्यास कराए जाएं तथा साथ में होम्योपैथी मदर टिंचर साइजेजियम जमवोलिकम का सेवन निर्धारित मात्रा में करवाया जाये तो मधुमेह को नियन्त्रित कर उसका प्रबंधन किया जा सकता है तथा रोगी सामान्य और संतुलित जीवनयापन कर सकते है ।

अतः नीति निर्धारकों, तथा चिकित्सा शिक्षा नीति एवं शोधार्थियों को इस अध्ययन के परिणाम जरूर लाभान्वित करेंगे एवं इस दिशा में शोधकार्य को बढ़ावा देंगे।

– डॉ. अशोक पचौरी (शोधार्थी)
– डॉ. ओम नारायण तिवारी (शोधनिर्देशक)
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
करौंदी जिला कटनी (म.प्र.) मो. 6265203961

संदर्भ :

1. विनोद कुमार
(2016) कामपलीमेनटरी थेरेपी इन मेडिसिन 25 (2016) 104–116

2. अन्नथा कृष्णा बी.एस. (2016) आई.जे. एस. आर. इंटरनेशनल जर्नल आफ साइसटिफक रिसर्च

3. घैरण्ड संहिता, स्वामी निरंजनान्द सरस्वती, विहार योग भारती, मुंगेर, बिहार पृष्ठ क्रमांक 231 से 272

4. आसन प्राणायाम, मुद्रा बंध स्वामी निरंजनान्द सरस्वती, विहार योग विद्यालय, मुंगेर, बिहार संस्करण वर्ष 2004 पृष्ठ क्रमांक 298 से 323

5. दमा, मधुमेह ओर योग, स्वामी सत्यानंद सरस्वती, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार पृष्ठ क्रमांक 214 222

6. yogic Management of Common disease स्वामी सत्यानंद सरस्वती, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार पृष्ठ क्रमांक 56 से 68

7. मुद्रा चिकित्सा, योगाचार्य डॉ. रमेश पुरी, ओशो नानक ध्यान मंदिर, सोनीपत, हरियाणा पृष्ठ क्रमांक 26 से 40

8. मधुयोग विशेषांक प्रथम संस्करण 2011–2012, डॉ. आर.एच. लता, स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान बेगलौर पृष्ठ क्रमांक 28 से 41

9. Boricks Homoeopathic Materia Medica & Editition Jun 1927

10. The prescriber J-H & Clarke & BJain Publishers (P) Ltd. ISBN-81-7021-258–8 Aug 2005

तालिका क्र.–4.1

प्रायोगिक समूह (प्रथम) एवं नियंत्रित समूह के मधुमेह रोगियों के पूर्व एवं पश्चात परीक्षण के आधार पर उनके फास्टिंग ब्लड शुगर "खाली पेट" (F.B.S.) पर योग मुद्राओं व होम्योपैथी मदर टिंचर्स के प्रभाव को दर्शाती तालिका।

समूह	परीक्षण	संख्या	मध्यमान M_1	मानक विचलन (SD)	मध्यमान का मध्यमान M_2
प्रायोगिक समूह प्रथम	1/8/2020 पूर्व	50	175.1	27.8	147.45225
	2/11/2020 पश्चात-1	50	149.6	23.6	
	4/2/2021 पश्चात-2	50	132.8	15.6	
	6/5/2021 पश्चात-3	50	109.9	16.2	
नियंत्रित समूह	1/8/2020 पूर्व	50	149.1	10.6	
	2/11/2020 पश्चात-1	50	151.3	11.2	
	4/2/2021 पश्चात-2	50	154.1	10.9	
	6/5/2021 पश्चात-3	50	157.7	11.9	
	योग	400	1179.618		

तालिका क्र.–4.1.1

समूह	परीक्षण	M_1	$M_1 - M_2$	$(M_1 - M_2)^2$	$(M_1 - M_2)^2 \times 50$	SD	$(SD)^2$	$(SD)^2 \times 49$
प्रायोगिक समूह प्रथम	पूर्व	175.06	27.60775	762.18786	38109.393	27.774074	771.399	37798.56
	पश्चात-1	149.596	2.14375	4.5956641	229.7832	23.57722	555.885	27238.379
	पश्चात-2	132.794	-14.65825	214.86429	10743.215	15.562296	242.185	11867.068
	पश्चात-3	109.866	-37.58625	1412.7262	70636.309	16.198131	262.379	12856.592
नियंत्रित समूह	पूर्व	149.134	1.68175	2.8282831	141.41415	10.581513	111.968	5486.4522
	पश्चात-1	151.334	3.88175	15.067983	753.39915	11.158535	124.513	6101.1322
	पश्चात-2	154.134	6.68175	44.645783	2232.2892	10.860744	117.956	5779.8322
	पश्चात-3	157.7	10.24775	105.01638	5250.819	11.934413	142.43	6979.08
	योग				**128096.62**			**114107.1**

ANOVA Table **तालिका क्र.–4.1.2**

Source of Variation	d.f.	Sum of Squares	Mean Square	F-Ratio	P- Value
Between Groups:	7	128096.6218	18299.5174	62.86559783	<0.0001
Within Groups:	392	114107.0962	291.0895311		

Degree of freedom - 7, 392

Minimum value at 0.05 level 2.0329
Minimum value at 0.01 level 2.685

'याक जाकोर का वध आदिवासी युवक–यू बकाइरखू के उत्कृष्ट जीवन संघर्ष की कहानी : एक मिथकीय व्यंजना

– डॉ. श्रवण कुमार

आदिवासी का जन–जीवन प्रकृति– प्रिय, सहज, निश्छल एवं त्यागमय भावना से परिपूरीत होता है। वे 'सहनो भुनक्तु', 'संगच्छध्वं' के सिद्धान्त पर अपना जीवन जीते हैं । वे प्रकृति की सुनहरी गोद में पलकर – सन्तोषी जीवन जीते हैं। उनकी पहचान परोपकार, त्याग, तपस्या, तपोबल, सहृदयता, वीरता, उत्सव – प्रियता, धार्मिक एवं सहनशीलता के रूप में है। उन्होंने अपने जीवन में सूर्य के तेज से उष्णता तथा चन्द्रमा से शांति या शीतलता को ग्रहण किया है। उनकी विरासत, नदी–नाले, जंगल एवं जमीन है। इनका निवास स्थान नदी, पहाड़ी एवं टीलों पर था आदिवासी शब्द कालवाची शब्द के रूप में 'आदि है जिसका अर्थ आदि काल तथा वासी से आशय है रहने वाला व्यक्ति अर्थात् प्रारम्भिक काल से रहने वाला व्यक्ति, समुदाय या कुनबा है।' आदिवासी शब्द के रूप में गिरिजन (जनजाति) जो इस देश की मूल निवासी थी। उसे विदेशी आक्रान्ताओ ने खदेड़कर जंगलों में रहने के लिए बाध्य कर दिया। जो यहाँ गाँवों एवं नगरों में रहे वे आज दलित जातियों के रूप में जाने जाते हैं तथा जो जंगलों में भाग गये वे आदिवासी के रूप में पहचाने जाते हैं। आज वह सभ्य समाज के लिए मनोरंजन का साधन है। वे उन्हें संस्कृति के नाम पर नृत्य, संगीत एवं कला के द्वारा दिवारों पर इस्तगार के रूप में चित्रित करते हैं। जो कभी नाग राजाओं के रूप में अपनी पहचान रखते थे। इनका भी अपना गौरवशाली इतिहास था। आज मूल निवासी 85 प्रतिशत होने के बाद भी वे राजनीति के शिकार हैं। हाँ उनके नृत्य, संगीत एवं कला के नाम पर नाम अवश्य लेंगे यथा कालबेलिया (नाग) नृत्य, तेरा ताली नृत्य एवं विविध संस्कृतियों के गीतों के मूल में आदिवासी रंगत विद्यमान है। आज उसे धर्म, प्रथा, जीवन शैली, गण चिह्न, उत्सव गल्पगीत एवं जादू–टोना, जन्तर–मन्तर, जड़ी–बूटी में विश्वास मिथक के रूप में अपनी पहचान को 'कछुआ धर्म' ने अपना ग्रास बना लिया है।

ये आदिवासी आक्रान्ताओं द्वारा गुलाम बना लिये गये थे वे दलित तथा जो पलायन कर गये वे आदिवासी नाम को धारण करते हैं मूलतः दोनों एक ही थे ।

राजेन्द्र यादव

आदिवासियों का इतिहास विद्रोह और बहादुरी का रहा है। लेकिन दलितों और स्त्रियों का इतिहास गुलामी और घुटन का रहा है।[1]

रमणिका गुप्ता ने आदिवासियों पर अनेकों कहानियाँ लिखी हैं–बहू जुठाई, कहानी संग्रह, परबतिया, नौकरी, जिखा माय तथा प्यारी आदि कहानियों में स्त्रियाँ ठेकेदारों के देह शोषण की शिकार हुई हैं।

आदिवासी आज राजस्थान, बिहार, उड़िया, झारखण्ड, असम एवं मध्यप्रदेश में रहते हैं। उन्हें असभ्य, बर्बर, राक्षस, दानव, नक्सली, दस्यु आदि मानव नाम से उपेक्षित किया जाता है। आज उनके सामने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन संकट से निकलने के लिए कूक और हूक के सिवा कुछ भी नहीं है। वे सदियों पुराना जीवन जीने के लिए विवश हैं। सरकार आदिवासी कल्याण के लिए योजना लाती हैं किन्तु सभ्य समाज आदिवासी भोलीभाली युवतियों से कामपिपासा शांत करते हैं। उनकी रिपोर्ट तक नहीं लिखी जाती है।

आदिवासी एवं गैर आदिवासी में अन्तर करते हुए संजीव लिखते हैं वे इस मायने में असभ्य जरूर हैं कि उन्हें छुपाना नहीं आता, हमें आता है, पार करके जो जितने बेहतरीन ढंग से छुपा ले जाए, वो उतना ही तमीजदार। खून करने के बाद वे खुद थाने में हाजिर हो जाते हैं मैंने खून किया है, मुझे सजा दो। हमारे बड़े–बड़े

नेता शरीफजादे भी आखिर तक इंकार करते रहते हैं और कुछ इधर–उधर करके जाँच कमीशन के फंदे से सही साबूत निकल आते हैं बेशक वे ऐसे सभ्य नहीं हुए अभी।[2]

आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में बाजारवाद ने आदिवासी जीवन को दबोचकर नट बस्ती, कंजर बस्ती एवं दलित बस्ती के रूप में लाकर खड़ा कर दिया है। इसलिए आदिवासी कहानियाँ आदर्श से कोसों दूर है ।

प्रारम्भिक काल में दलित एवं आदिवासी कही जाने वाली जातियों को ड्रेगन कहा जाता था। 'याक जाकोर का वध कहानी में 'याक जाकोर' एक काला वर्ण का द्रविड़ आदिवासी है जिसे 'ड्रेगन' कहा गया है। ऋग्वेद में वृत्र या मेघ को प्रत्येक ऋचा में 'ड्रॅगन' कहा गया है। जबकि वह ड्रेगन नहीं है। आर्य शक देवता इन्द्र तथा वृत्र या मेघ का युद्ध बहुत ही प्रसिद्ध है जिसे देव असुर मेघ – भरत (महा–भारत), काल – यवन युद्ध, कौल पाण्डुत युद्ध, राम गवन युद्ध के रूप में मिथकीय कथानक के रूप में प्रस्तुत किया गया है । आदिवासी नदी, पहाड़ी एवं टीले स्थान पर रहने के कारण वे युद्धवीर थे। प्रस्तुत कहानी मेघालय में खासी आदिवासी जाति की प्रसिद्ध कहानी है। सच यह कि यह ड्रेगन या यक्ष या प्रेत और कोई नहीं आज का तथागत आर्य जाति का सरदार ही था इसका प्रमाण देवताओं का जीवन रूपक–मय था वे छद्म रूप या स्वांग करके रूप या अवतार बनकर बहुरूपिया बनते थे लेकिन भोली भाली जाति को इस रहस्य का पता नहीं था । इसीलिए देवताओं के चार हाथ, दो, तीन, चार, पाँच, छः सात, आठ, दश एवं बीस सिर तक बताये गये हैं। 'आर्य यक्षों (ड्रेगनों) की भारत को देन' पुस्तक में यह स्पष्ट वर्णित है कि–'पुराणों में यक्ष शब्द का आधार 'क्षी' धातु को माना गया है जिसका अर्थ है क्षीण करना या विनाश करना है। कुछ प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि यक्षों को कश्यप ने उपासना से उत्पन्न किया था अन्य ग्रंथों वे प्रचेता के पुत्र थे। पद्मपुराण में उन्हें ब्रह्मा ने अपनी मनः सामर्थ्य से उत्पन्न किया था। वायु और ब्रह्माण्ड पुराणों में कहा गया है कि ब्रह्म से उत्पन्न होने पर यक्षों ने जलों (मेघों) को क्षीण करने की चेष्टा की थी इसीलिए वे यक्ष कहलाये। विष्णु पुराण में यक्षों को प्रजापति से उत्पन्न माना गया है। रामायण (उत्तरकाण्ड में सर्ग – 4) में कहा गया है कि प्रजापति ने मेघों (जलों) का निर्माण करके उनकी रक्षा के लिए कुछ सत्वों का निर्माण किया। उन्होंने ब्रह्मा से पूछा हम क्या करें ? ब्रह्मा ने कहा, रक्षा वहम् इसके उत्तर में कुछ नहीं कहा वयं यक्षाम् और कुछ ने कहा वयं रक्षामः। इनमें वयं यक्षामः कहने वाले यक्ष कहलाये तथा रक्षामः कहलाने वाले राक्षस कहलाये।[3] यहाँ यक्ष और रक्ष शब्द कहने वाले एवं लिखने वाले स्वयं सभ्य समाज ही है जो मूल में सेवा, आदर, सत्कार, सम्मान करने वाला था उसे रखने को कहा। किन्तु बाद में 'रक्षा' करने वाले को राक्षस कह दिया यह उनकी चतुराई है। भारतीय कहानी के मूल में मनुष्य को दो वर्ण काला और गौरा भौगोलिक कारण विभेद या नस्लीय भेद के कारण बांटा गया। वहीं आगे चलकर वर्ण भेद मिथकीय रूप लेकर कहानियों में प्रकट हुआ। काला वर्ण को नाग तथा गौर वर्ण गरुड़ नाम से मिथक के रूप में आया। किन्तु यह मिथक का स्वरूप बदलने वाले सभ्य लोग ही थे। कभी आदिवासी को नाग कहा तो स्वयं नागनाथ बन गये तो कभी साँपनाथ बन गये। कभी नकुल (नेवला) और सहदेव बन गये। नकुल जाति नाग की दुश्मन वैसे ही होती है जैसे गरुड़ और नाग की दुश्मनी।

नाग की दुश्मनी आगे मिथकीय कहानियों में इतिहास दर्शन में मोर से भी होती है। आदिवासी नाग जाति की दुश्मनी चन्द्रगुप्त मौर्य से थी । सान्द्रकोटस यूनानी था। उन्होंने आदिवासियों को अपने नदी नाले, दर्रो, पहाड़ियों तथा वन प्रान्तरों से खदेड़ दिया था । संजीव की 'टीस' कहानी में आदिवासी जन जाति का शिबू काका की सरकारी तन्त्र के मालिकों, ठेकेदारों एवं आकाओं की मिलीभगत के कारण जमीन चली जाती है। वह दुःखी स्वर में कहता है 'इन्सानों के रूप में यह जहरीले सांप छुपे हुए हैं।' सभ्य जाति पर आक्रोश में

कहते हैं

आपके चारों तरफ सौंपई – सांप हैं। गाँव के मुखिया को अजगर, उसके बेटे को डेमला (धामिन) जो गाँव के विकास के लिए आने वाले पैसे हड़प लेता है दुकान वाले सेठ को पीवणा नाग, सूबेदार को चिती – नाग मुनीम को बड़ा नाग, अफसरों को गाँव में घूमने वाले सांप। वन जंगल विभाग के अफसरों को दास शंखचूड़ नाग आदि नाम–अभिधान करते हैं पुजारी भट्टाचार्य को सबसे अधिक जहरीला नाग कहा है क्योंकि वह आदिवासी लोगों को ईसाई बनाने के लिए डराता है उसे अगर साँप भी डंसेगा तो साँप भी मर जाएगा। ये सारे शोषक भ्रष्ट लोगों से आदिवासी जन – समाज उनके सामने लाचार और हम तो बेग (मेंढक) और माछ बेबस है इसलिए शिबू काका ने उचित ही कहा है (मछली) हैं जो चाहे गटक जाए।[4]

हमारे यहाँ प्रवाद रूप में मिथकीय गल्प प्रचलित हैं–

आदिवासियों की कहानियों में उन्हें स्त्रियों को डायन बनाना दान देने वालों को दानव कहकर मार देना, गन्दे–कुचले कहकर नाक–मुँह निपोरना, रक्षा करने वालों को राक्षस कह देना, यह उनका मौहल्ला है कहकर गोरख–धन्धा कह देना जबकि गोरख जाति एवं योगी है। वह उसका गुरू है किन्तु उसका गुरू एक भोगी सभ्य राजा मच्छन्दर को झूठा ही प्रचारित करना । इस प्रकार जितने भी इन त्रिलोकी में मिथक है उनके मूल सभ्य–समाज ने अपने स्वार्थपूर्ति के लिए दूसरे के कन्धे पर बन्दुक रखकर आदिवासी– दलित का संहार किया है। खांसी (मेघालय) की कहानी 'उथ्लेन' नाग देवता किसी राजा का पुत्र है वह राजा आदिवासी स्त्री 'मावलौंग सिएम' की पुत्री है सभ्य राजा या ईश्वर या देव समाज आदिवासी लड़कियों को गणिकावृत्ति में धकेल देते थे इसलिए एक स्त्री पांच पांडु वर्णी की पत्नी होती थी। उससे होने वाली सन्तान भरत आदि को समाज में त्रासित एवं शापित बना दिया जाता है। आदिवासी युवतियों को भरत का पिता कौन है? कहकर समाज को सबूत देना पड़ता था । वे प्रकरण– वक्रता में स्वयं ड्रेगन हैं किन्तु आदिवासियों को ड्रेगन कहते हैं। वे देवता, नाग देवता, ड्रेगन मनचाहा रूप (स्वांग) या बहुरूपिया बन कर समाज में भय व्याप्त करते थे। मनोरंजन करना तथा अनेकों उद्देश्यों की पूर्ति करना उनका लक्ष्य था। प्रस्तुत आलेख 'याक जाकोर का वध' आदिवासी कहानी का 'याक जाकोर' 'ड्रेगन' रूपक है। यह कहानी प्रकल्पना पर आधारित है। ड्रेगन मन चाहा रूप बदल लेता था भारतीय उसे यक्ष कहते हैं। हमारे देश के सभी देवता पूर्व में यक्ष रहे हैं । यह कहानी एक गरीब परिवार की है जिसमें सभी परिवार के सदस्य सुखी थे परिवार में कुल चार सदस्य थे बूढे पति–पत्नी और उनका इकलौता बेटा तथा बहु। उनकी जिंदगी अपनी थोड़ी बहुत जमीन पर खेती करके और पास की नदियों से मछली मारकर बसर हो रही थी।[5] कहानीकार बिजोया सावियान ने काल्पनिक आख्यान जोड़ते हुए कहानी में एक साधु का घर में आगमन करते हैं वह देहरी पर खड़ा भोजन मांग रहा था। परिवार वालों ने अभ्यागत को भोजन करवाया बदले में साधु ने खरगोश खाने के लिए दिया तथा भविष्यवाणी करते हुए कहा इसे खाएगा उस पर धन–वैभव की वर्षा होगी। यह कहानी में नया अन्धविश्वास जोड़ दिया है। मांस पकने पर खाने से उनके स्वभाव में परिवर्तन आ गया जो सन्तोषी थे वे लालची एवं स्वार्थी बन गये । बहु को मांस खाते देख सास ने अप्रत्याशित क्रोध किया जो उसने पहले कभी नहीं देखा था । वह बहु दुःखी होकर अपने पति की तलाश में निकल गई। पति के मिलने पर फूट–फूट कर रोने लगी। पत्नी की बात सुनकर बेटा तुरन्त माता–पिता को छोड़कर चले गये। वे अपनी पत्नी के साथ मायके में थीं जहाँ उनके घर पर कोई नहीं था वहीं उसने एक पुत्र को जन्म दिया नौजवान जंगल से शिकार लाकर अपनी उदर पूर्ति करने लगा। एक दिन वह नदी में स्नान कर रहा था वहाँ एक नर भक्षी 'याक जाकोर' ड्रेगन यक्ष छिपा था उसने उस नव जवान को अपना शिकार बना लिया।[6] पति को ढूंढने निकली पत्नी को नदी के किनारे पर 'याक जाकोर' को

देखकर अपने पति के क्षत–विक्षत कपड़े देखकर जान गई कि यह काम भयानक ड्रेगन का ही है । याक जाकोर उसे भी अपने आगोश में लेना चाहा वह वहां मूर्छित हो गयी, किन्तु पास से गुजर रहे लकड़हारे ने उसे बचाकर अपने घर ले आये। उसने अपने पुत्र का नाम 'यू बकाइरखू दोह' रखा। यह बच्चा साधु के वरदान से प्राप्त था । यही वरदान मिथक है। वह अपने माँ के साथ रहकर बड़ा हुआ। 'यूं बकाइरखू दोह' अपनी 'सुन्दरता' जो आदिवासियों से भिन्न थी के कारण युवराज का प्रिय हो गया। अपने गुणों के कारण युवराज को पांसा खेलने में चुनौती देने लगा। एक दिन दुःखी युवराज ने उसे यह कह दिया कि तेरे पिता कौन हैं? उसने उत्तर देते हुए कहा कि वह यक्ष देवता 'याक जाकोर' का बेटा है। नदी में रहने वाले ड्रेगन का बेटा है। तभी घर आकर अपनी माँ को सारी घटना बतायी कि वह नदी के तट पर कैसे बेहोश हो गयी थी । वह ड्रेगन पहले यख के वेश में साधु या देवता बन कर हमारे घर में आया था। इस कथा में कल्पना का प्रवेश करके चमत्कारिक बनाकर कथानक की नवीन सर्जना कहानीकार ने की है।

यू बकाइरखू ने यह निश्चय किया कि वह अपने पिता का बदला 'याक जाकोर' से लेगा जिन्होंने एक पूर्ण परिवार जिसमें दादा–दादी पिता एवं मां थे उसको देव यक्ष ड्रेगन के रूप में साधु के वेश में आकर नष्ट कर दिया। यू बकाइरखु नदी के किनारे जाकर यक्ष यक्षारे (याक जाकोर) को पकड़कर अपनी संदूक में बंद कर लिया तथा घर में रख दिया, लेकिन 'याक जाकोर' स्वांग नाटककार था उसने अपना स्वरूप यू बकाइरखू के पिता का बनाकर अन्तरंग स्वर में बोला 'प्राण प्यारी रोओ मत' और मेरी बात ध्यान से सुनो। मेरे सामान्य जीवन में आने के लिए मुझे अपनी कुछ प्रतिज्ञा पूरी करनी जरूरी है। तुम मुझे पीने के लिए बाघिन का एक सेर दूध लाकर दो।' 'बिल्कुल चिंता न करो प्रियतम।' वह खुशी से रोती हुई बोली । यही प्रस्ताव अपने पुत्र के पास रखा। पुत्र बाघिन का दूध लाने के लिए निकला अपनी बहादुरी बलवान भुजाओं के बल पर वह बाघिन का दूध ले आया । यक्ष क्रोधित हुआ – उसे मारने के लिए दूसरी योजना बनाई – कि 'तुरंत मारे गये भालू की चर्बी से मेरे शरीर की मालिश करो।' उसने कहा जो आदेश। यू बकाइरखू को आदेश दिया वह जंगल में निकला और भालू को पकड़कर घर ले आया तभी एक बाघ का छोटा बच्चा सामने प्रकट हुआ वह कहने लगा कि तुम्हारे माँ ठीक हो गयी। (वह यक्ष बाघ के बच्चे के रूप में था) लेकिन घर पर देखा तो वह बेसुध पड़ी कराह रही थी। तभी उसने भालू को मारकर चर्बी माँ को दी।

किंतु यक्ष जाकोर ने मारने के लिए अन्तिम प्रयास अजगर की खाल उधेड़कर लाने के लिए कहा। किंतु यू बकाइरखु दोह ने छिपकर देखा तो उसकी माँ रसोई में गाना गुन गुना रही है। वह यक्ष को पति का नाम लेकर पुकार रही थी। तभी यू बकाइरखु दोह चीखता हुआ माँ से बोला कि यह मेरा पिता नहीं है यह यख जाति दैत्य है जो भूत, पिशाच, यक्ष, गन्धर्व, देवता, ईश्वर, किन्नर, दानव एवं राखस तथा विद्याधर दस रूप के अतिरिक्त सांग जाति है यह राजा (यक्ष) नर भक्षी है । तुम मेरे ही प्राण लेने के लिए इसके साथ हो गयी। अन्त में युवराज के दरबार में उस देव यक्ष जाति के वंश को पहचान कर उस याक जाकोर ने तलवार से टुकड़े–टुकड़े कर दिए। आगे चलकर आदिवासी यू बकाइरखू सिश्म वंश का उत्तराधिकारी बना। इस कहानी में कथाकार ने मूल कथा में चमत्कार लाने के लिए शाप एवं स्वांग विधि द्वारा प्रकरण कथा के प्रसंग को बदल कर नवीन कथा का समावेश कर दिया है जिससे कथा रोचक कुतूहलपूर्ण एवं रहस्यपरक बन गयी है। इस कहानी में भारतीय साधु यक्ष वेश में विद्याधर बन कर सामान्य जन, गिरजन पर किस प्रकार अत्याचार करते हैं? इसका वर्णन – व्यंजना पूर्ण ढंग से कथानक वैचित्र्य द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जो आदिवासी जीवन के मिथकीय गल्पाख्यान को प्रस्तुत करता है।

– डॉ. श्रवण कुमार
सह आचार्य, हिन्दी विभाग
III/2, विश्वविद्यालय आवास
रेजिडेन्सी रोड, रातानाड़ा, जोधपुर – 342001 (राज.)
मो. 9352671936

संदर्भ :
1. अरावली उदघोष – 65, अंक– 88, सम्पादक, जनकसिंह मीणा, सी. 3 / 175 सेक्टर–3, चित्रकूट, गांधीपथ, जयपुर।
2. आदिवासी कहानी साहित्य और विमर्श संपादक खन्ना प्रसाद अमीन अनुज्ञा बुक्स, शाहदरा दिल्ली, संस्करण 2020, पृ. सं. 24
3. यक्षों की भारत को देन– अरुण, कुसुमांजलि बुक वर्ल्ड 41–ए, सरदार क्लब स्कीम जोधपुर, संस्करण– 1990, पृ.सं. XIV भूमिका भाग।
4. दस प्रतिनिधि कहानियाँ – संजीव, पृष्ठ सं. 26
5. पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोक कथाएँ संपादक – रमणिका गुप्ता, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया संस्करण – 2010 पृ.सं. 113
6. पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोक कथाएँ संपादक – रमणिका गुप्ता, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया संस्करण – 2010 पृ.सं. 115
7. पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोक कथाएँ संपादक – रमणिका गुप्ता, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया संस्करण – 2010 पृ.सं. 117

विश्व में बुद्ध

– डॉ. रामहेत गौतम

बुद्ध की शिक्षाओं के सार से जुड़े रहना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उनके केन्द्र में मानवता की सेवा है। पूरे विश्व में 550 मिलियन से अधिक अनुयायी हैं।[1] बुद्ध की शिक्षायें किसी के विरोध में नहीं हैं तथा सभी के द्वारा स्वीकार्य हैं। भारत ही नहीं पूरे विश्व में बुद्ध की तार्किकता के बिना न्यायशास्त्र परम्परा अधूरी ही रहती है। बुद्ध के तर्कपूर्ण सरल समाधान सर्वसुलभ हैं। इन्हीं खूबियों के कारण सम्पूर्ण विश्व के लोग भारत भूमि को तीर्थस्थल के रूप में देखते हैं। सार्वभौमिक करुणा और अहिंसा विगत 2600 वर्षों से भारत के सारनाथ, गया, साँची आदि की ओर विश्व को आकर्षित कर रहे हैं।

बुद्ध ने अपने आलोचकों तथा विरोधियों को न कभी तिस्कृत किये, न ही उनके प्रति कभी हिंसा का भाव जाग्रत किया। बल्कि युद्धों से जूझ रही दुनिया को मैत्री का संदेश दिया। सम्राट अशोक इतना प्रभावित हुआ कि बुद्ध के धम्मचक्र का प्रवर्तन पूरे विश्व में किया। बुद्ध का संदेश सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक विकृतियों के प्रति विद्रोह के रूप में स्थापित होता चला गया।

जीवन की कठिनाइयों से जूझ रही मानवता की पीड़ा को कम करने के लिए बुद्ध स्वयं निकल पड़ते हैं। उनके दुःखों के कारणों से उन्हें अवगत कराया। उन कारणों के निवारण को बताया तथा उसके उपाय भी सुझाये। सम्यक् ज्ञान, एकाग्रता और आत्मानुशासनमय उपाय बताये। लोगों ने इन्हें आजमा कर देखा। उन्हें फायदा हुआ तो वे भी बुद्ध के धम्म में दीक्षित होते चले गये।

कर्मकाण्ड की जटिलताओं से तंग आ चुके लोग बुद्ध के सरलतम उपायों की ओर आकर्षित होते चले गये। जगह–जगह बुद्ध को आमंत्रित किया जाने लगा। इस प्रकार शाक्यमुनि की यात्राओं से उनका धम्म राजाओं, धनपतियों, व्यापारियों, किसानों तथा श्रमिकों आदि को समान रूप से शान्ति प्रदान करने लगा।[2]

भिक्खु भ्रमण–बुद्ध की शिक्षाओं से दीक्षित होने वाले लोग शिक्षक के रूप में तैयार होते चले गये। वे दुनिया में घूमे तथा तथागत के उपदेशों के प्रति रुचि रखने वालों को उपदेशित किया। वे लोगों को अपने धर्म को छोड़ने के लिए नहीं कहते थे न ही उनके धर्म की निन्दा करते थे। वे तो उन्हें बुद्ध के मानवता परक मूल्यों को अपनाने को कहते थे। लोग इन्हीं अच्छाईयों को अपनाते गये और इस तरह बौद्ध धर्म की सुगन्ध स्वतः दूर–दूर तक फैलती चली गई।[3]

व्यक्तिगत जीवन समस्याओं के समाधानयमयी शिक्षा–उनकी शिक्षाओं में व्यक्तिगत जीवन की समस्यों के समाधान थे। व्यक्तिगत समस्यायें मिटने पर सामाजिक समस्यायें कम होती गयीं लोग जुड़ते गये। किसागोतमी थेरी कहती है कि –

कल्याणमित्तता मुनिना, लोकं आदिस्स वण्णिता।

कल्याणमित्ते भजमानो, अपि बालो पण्डितो अस्स।।[4]

व्यापारी आकर्षण – व्यापारी लोग विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक उलझनों से अधिक परेशान रहते थे। उन्होंने बुद्ध की सरल शिक्षाओं को अपनाया तो उन्हें मानसिक स्वास्थ्य लाभ हुआ। वे भी उनके सिद्धान्तों से प्रभावित होकर धम्म के संवाहक होते चले गये।

अपनाया और बताया की तर्ज पर बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार– प्रसार धर्म् की दृष्टि से कभी भी नहीं हुआ। इनमें किसी की निन्दा नहीं थी न ही किसी को विधर्मी होने का दुर्वचन, न तिरस्कार, न उपेक्षा अतः प्रत्येक धर्मपन्थ के बुद्धिजीवी ने बुद्ध को स्वीकार किया, अपनाया, तथा उसके प्रचारक हो गये। कपिलवस्तु के थेर भगु कहते रहैं कि

ततो चित्तं विमुच्चि मे, पस्स धम्मसुधम्मतं ।

तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति।।[5]

राजाओं का आकर्षण – जनता ही नहीं राजा भी बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति आकर्षित होते गये।[6] जैसे कि इण्डोग्रीक सम्राट मिनाण्डर बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में सुनकर बौद्ध भिक्खु नागसेन से प्रश्न करता है। बाद में संतुष्ट व प्रभावित होकर बुद्धोपासक हो जाता है। प्रजा में नैतिकता को बढ़ाने के लिए शासकों ने भी बुद्ध की शिक्षाओं को प्रचारित किया।[7] बिना किसी दबाव के जनता ने सहज स्वीकार भी किया। बुद्ध का मार्ग कट्टरता से रहित तथा आवश्यकतानुसार अपनाने की छूट ने इसे सहज बना दिया ।

कथोपकथन से फैलाव–

बुद्ध का ध्येय अपने धर्म की स्थापना नहीं अपने दुःखों से मुक्ति के अभिलाषी लोगों की सहायता करना था। दुःख की अनुभूति से मुक्त हो चुके लोग अपने अनुभव अन्य लोगों को सुनाने लगे तथा बुद्ध की उन शिक्षाओं जिन्हें उन्होंने अपनाया और बदलाव महसूस किया को सहज ढंग से अन्य लोगों को बता देते। इस प्रकार एक से दो, दो से चार के गुणांक में बुद्ध की शिक्षाएं फैलती चली गईं। विद्वानों को शास्त्रार्थ की खुली चुनौती देने वाले अश्वघोष बुद्ध की शिक्षाओं से इतने प्रभावित होते हैं कि बुद्ध के संदेश को जन–जन तक पहुँचाने के लिए काव्यकर्म में प्रवृत्त होते हुए कह उठते हैं–

बुद्धानुरागादनुगम्य तस्य, शास्त्रं च लोकस्य हिताय शान्त्यै।
काव्यं कृतं ज्ञापयितुं निजस्य कला न काव्यस्य च कोविदत्वम्।।[8]

व्यापार के साथ–रेशम मार्ग (सिल्क रूट) में आने वाले राज्यों के लोगों को व्यापार के माध्यम से बुद्ध के सिद्धान्तों का पता चला। व्यापारियों के आवासीय क्षेत्रों में बौद्ध भिक्खु आने लगे। उन भिक्खुओं के शील आदि से लोग प्रभावित हुए और दीक्षित होते चले गये। बौद्ध भिक्खुओं को आवासीय संघारामों का निर्माण कराकर दान किये गये।[9]

भारतीय उपमहाद्वीप से पूरे एशिया में फैलते समय बुद्ध की चेतना व करुणा मय सिद्धान्त जहाँ भी पहुँचे वहाँ की संस्कृति को आहत किये बिना ही लोगों के मानस में हवा में सुगन्ध की भाँति घुल गये। वर्तमान में तिब्बत के दलाई लामा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुविख्यात धर्माचार्य हैं।

बौद्ध धर्म की दो प्रमुख शाखायें हैं– हीनयान तथा महायान। हीनयान साधारतः व्यक्ति की मुक्ति पर जोर देता है। जबकि महायान बृहद् में अधिक से अधिक दूसरों की मदद पर जोर देता है। थेरवाद हीनयान की ही एक शाखा है। चीनी व तिब्बती शाखायें महायानी हैं ।

प्रसार क्षेत्र–भारत भूमि से उपजा बुद्धविचार सबसे पहले दक्षिण–पूर्व एशिया में फैला तत्पश्चात् मध्य एशिया के लोगों ने बुद्ध को अपने जीवन में अपनाया। मध्य एशिया से चीन में भी पहुँचा बुद्ध का मध्यममार्ग। चीन से शेष पूर्वी एशिया तथागत के बोध से आलोकित हो उठा। पूर्वी एशिया से मध्य एशिया के दूरवर्ती इलाके भी बुद्ध के ज्ञानदीप से दीप्त हुए। इस प्रकार सम्पूर्ण एशिया में बुद्ध की व्याप्ति का मूल कारण बना इन क्षेत्रों में व्यापार करने वाले लोगों की तथागत की शिक्षाओं के प्रति अभिरुचि रही है।

शक् संवत् काल की दूसरी शती पूर्व से दूसरी शती बाद की अवधि में मध्य एशिया के रेशम–मार्ग

(सिल्करूट) के राज्यों के लोग बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित होते चले गये। इन क्षेत्रों के व्यापारियों के संपर्क में रहने वाले बौद्ध भिक्खुओं से बुद्धवचनों को सुनते और पसन्द आने पर अपना लेते थे। दक्षिण–पूर्व एशिया, फिर मध्य एशिया, चीन, पूर्वी एशिया, तिब्बत में विदेशी व्यापारियों की बौद्ध मान्यताओं में स्थानीय लोगों का आकर्षण बौद्ध धर्म के पल्लवन ने महत्त्वपूर्ण रहा।

सम्राट् अशोक के शासनकाल के आस पास थेरवाद श्रीलंका व म्यांमार में खूब फैला। उसके बाद इंडोनेशिया, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया, दक्षिण वियतनाम में भी पहुँचा।

चीनी महायानी बौद्ध धर्म कोरिया, जापान तथा उत्तरी वियतनाम तक पहुँच गया। तिब्बत में सातवीं सदी में तिब्बत में महायान पल्लवित हुआ । उसके बाद वहाँ से हिमालयी क्षेत्र में व्याप्त होता हुआ मंगोलिया, मध्य एशिया तथा रूस के बुर्यातिया, कालमिकिया और तूवा तक प्रसारित हुआ।

आज के पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पूर्वी–ईरान, तटवर्ती ईरान, मध्य एशिया में हीनयान की अन्य शाखायें प्रसारित होकर पूर्व में आ चुकीं महायानी शाखाओं के साथ घुल–मिल गईं। हीनयान–थेरवाद (दक्षिणपूर्ण एशिया) – थेरवाद ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में थेरवाद का फैलाव भारत से श्रीलंका और बर्मा (म्यांमार) में हुआ फिर वहाँ से इंडोनेशिया के साथ–साथ पूर्व एशिया के बाकी देशों (थाईलैंड, लाओस, रूस कम्बोडिया, दक्षिण वियतनाम) तक फैला। महायान– चीन, तिब्बत में फैला। चीनी महायान का प्रसार कोरिया, जापान तथा उत्तरी वियतनाम तक हो गया। तिब्बती महायान सातवीं सदी में शुरु होकर हिमालयी क्षेत्र, मंगोलिआ, मध्य एशिया, (बुर्यातिया, कालमिकिया तथा तूवा) तक फैला । हीनयान की अन्य शाखाएं वर्तमान पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान के पूर्वी तथा तटवर्ती क्षेत्रों तथा मध्य एशिया तक हुआ। हीनयान की ये शाखाएं हीनयान की भांति फैली महायान की शाखाओं के साथ मिल गईं। अन्ततोगत्वा महायान चीन एवं मध्य एशिया के अधिकांश क्षेत्रों में बौद्ध धर्म की प्रधान शाखा के रूप में स्थापित हो गया।

बौद्ध धम्म की वैश्विक स्थिति–वर्तमान में इस प्रकार है। भारत में 2 प्रतिशत आबादी बौद्ध है 1956 में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के द्वारा बौद्ध धम्म की भारत में पुर्नस्थापना के बाद से तेजी से बहिष्कृत जातियाँ पुनः बौद्ध धम्म में दीक्षित हो रही हैं। बाबा साहेब ने **अछूत कौन थे** नामक ग्रन्थ में स्पष्ट किया हैं कि आज के अछूत पूर्व में बौद्ध थे जो ब्राह्मण धर्म की प्रतिक्रान्ति के दौर में बौद्धों के प्रति नफरत के भाव के कारण अस्पृश्यता के गर्त में धकेल दिये गये थे। **श्रीलंका** – यहाँ की 70 प्रतिशत आवादी बौद्ध है। दीपवंश जैसे ग्रन्थ यहाँ के बौद्ध इतिहास के स्रोत हैं। **म्यांमार (वर्मा)** – यहाँ की 85 प्रतिशत आबादी बौद्ध है। विपश्यनाचार्य एस. एन. गोयन्का जी यहाँ के विश्वविख्यात व्यक्तित्व हैं। **बांग्लादेश** – 01%, **थाईलैण्ड** – 95%, लाओस – 90%, **कंबोडिया** 95%, **वियतनाम** – 16%, **इंडोनेशिया** – 5%, **मलेशिया** – 20%, नेपाल – 9% आबादी बौद्ध है। इनके अलावा पूर्वी तुर्किस्तान, मंगोलिया, तिब्बत, रूस आदि में भी पारम्परिक तौर पर बौद्ध निवास करते हैं। अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप, फ्रांस, जर्मनी आदि में भी एशियाई प्रवासियों ने बौद्ध विचार को प्रसारित किया है।[10]

इस प्रकार हम पाते हैं कि बुद्ध का धम्म किसी की किसी भी पद्धति का खण्डन–मण्डन न करके केवल सत्य–सुगन्धि के रूप में स्वतः सर्वस्वीकार्य होता चला जा रहा है।

– डॉ. रामहेत गौतम
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर मध्य प्रदेश ।
मोबा. 8827745548

संदर्भ :

1.https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1738503

2. लोकाज्ञानतमश्छेत्तुमुद्यन् सूर्य इवाभितः । ययौ धन्यां पुरीं रम्यां मुनिर्भीमरथप्रियाम्।। बुद्धचरित– 14.111

3. बुद्ध ने सबसे पहले – महानाम, अश्वजित, बाष्प, कौण्डिन्य एवं भद्रिजित् नामक पाँच भिक्खू दीक्षित होकर प्रचारक बने थे। बुद्धचरित– 15.20

4. थेरीगाथा – 213

5. मेरा चित्त सभी संस्कारों से विमुक्त हो गया। धम्म की इस विशेषता को देखो कि मैंने तीनों विद्याओं (प्रज्ञा, शील, समाधि) को अच्छे से प्राप्त कर पूर्णतः अपना लिया है। थेरगाथा – 274

6. मिलिन्दप्रश्न।

7. सम्राट अशोक, कनिष्क, राजा मिलिन्द आदि तो प्रसिद्ध ही हैं। बर्जिन अलेक्जेंडर, एशिया में बौद्ध धर्म का प्रसार नामक लेख में कहते हैं कि – 16वीं शताब्दी में मंगोल के शासक अल्तान खान जैसे दूसरे धार्मिक शासकों ने अपनी प्रजा को एकजुट करने में सहायतार्थ बौद्धशिक्षकों को अपने राज्य में आमंत्रित किया था।

8. बुद्ध के शास्त्र का अनुशरण करके बुद्ध में अनुराग के कारण, लोक के हित एवं शान्ति के लिए यह काव्य लिखा गया है। काव्यकला अथवा पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए नहीं । बुद्धचरित–28.78

9. डॉ. मनमोहन सिंह प्रणीत– बुद्धकालीन समाज और धर्म– बौद्ध भिक्खु संघ, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना। प्रथम संस्करण 1972

10. डॉ. अलेक्जेंडर बर्जिन– आज के विश्व में बौद्ध धर्म की स्थिति।

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में कथ्य एवं शिल्प

– डॉ. ओमप्रकाश सैनी

प्रस्तावना : अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के कवियों में प्रमुख गिरिजाकुमार माथुर एक यशस्वी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। प्रयोगधर्मा भारती के काव्य में जिस रूमानियत के दर्शन होते हैं उसे माथुर के काव्य में अनदेखा नहीं किया जा सकता। माथुर की काव्य चेतना निरंतर विकासोन्मुखी रही है। गिरिजाकुमार माथुर 'तार सप्तक' के प्रमुख कवि होने के साथ–साथ नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर भी हैं। प्रथम सप्तक (सन 1943) में चौथे कवि के रूप में उनकी एक साथ बारह कविताओं का संकलन हुआ है। माथुर जी के महत्वपूर्ण काव्य संग्रहों में 'मंजीर' (सन 1941), 'नाश और निर्माण' (सन 1946), 'धूप के धान' (सन 1954), 'शिला पंख चमकीले' (सन 1961), 'जो बांध नहीं सका' (सन 1968) तथा 'भीतरी नदी की यात्रा' आदि प्रमुख है।

बीज शब्द : प्रणयानुभूति, अनुभूति, हस्ताक्षर, अतींद्रिय, वीभत्स, फूहड़ता, गजालत, अंतरंग, आस्वाद, देशानुराग, साम्राज्यवादी, युगांतरकारी, पौराणिक, परिपक्वता, यांत्रिक, समाधान, पलायन मर्मशीलता, मिलनातुरता।

विषय प्रवेश : गिरिजा कुमार माथुर प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख कवि होने के साथ–साथ समर्थ आलोचक, गद्यकार तथा नाटककार के रूप में विपुल साहित्य सृजन किया है। यद्यपि उनकी कविता में आरंभ से ही रूमानियत का भाव देखा जा सकता है तथापि उन्होंने मध्यमवर्गीय संवेदनाओं का भी खुलकर वर्णन किया है। वे युगीन समस्याओं तथा सामाजिक विषमताओं पर करारा प्रहार करते हैं। वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर उन्मुख होते हुए उनके काव्य में क्रमशः प्रणयानुभूति, प्रकृति–चित्रण, मानवीय चेतना, विश्व बंधुत्व की भावना, लघु मानव की प्रतिष्ठा, लोक जीवन का वर्णन आदि प्रवृत्तियों का उद्घाटन हुआ है। आरंभ में माथुर अपनी प्रणयानुभूति के अंतर्गत छायावादी कवियों की भांति श्रृंगार के दोनों पक्षों का बखूबी चित्रण करते है, तदनंतर वह 'ढाकबनी', 'शाम की धूप', 'बसंत की रात', 'गर्मी की शाम', 'चिल्का झील' जैसी कविताओं में प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण करते है। सच यह है कि वे नाना विषयों का चित्रण करते हुए अपनी प्रेमानुभूति को कभी नहीं भूलते। अतः उनकी कविता का महत्वपूर्ण उल्लेखनीय पक्ष प्रेमानुभूति ही है। प्रभाकर माचवे तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी ने माथुर जी की प्रणय भावना पर विस्तार पूर्वक लिखा है। सन 1938 में अंग्रेजी विषय में एम.ए. की पढ़ाई करते समय उन्होंने अपना पहला गीत लिखा जिसमें उनकी प्रेमानुभूति का स्पष्टतः आभास हो जाता है। माथुर की कविताओं में छायावादी कवियों की भांति अतींद्रियता नहीं है। वह सहज, सरल स्वभाव से अपनी प्रेम भावना को विस्तार देते हैं। इस दृष्टि से उनकी 'चूड़ी का टुकड़ा' कविता बड़ी महत्वपूर्ण बन पड़ी है। कवि के प्रारंभिक काव्य संग्रह 'मंजीर' की यह पंक्तियां देखिए –

तुम्हारे ही महलों में प्राण / जला क्या दीपक सारी रात
निशा का सा पलकों पर चिन्ह / भागती नींद नैन में प्रात
सखी लगता ऐसा है आज / रोज से जल्दी हुआ प्रभात।[1]

नई कविता के प्रयोगधर्मा कवियों में गिरिजाकुमार माथुर ने श्रृंगार के संयोग एवं वियोग का बखूबी चित्रण किया है। सन 1946 में प्रकाशित अपने दूसरे काव्य संग्रह 'नाश और निर्माण' में कवि ने सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ अपनी प्रेम–भावना का सुंदर चित्रण किया है। 'चूड़ी का टुकड़ा', 'रेडियम की छाया', 'दिल की आवाज', 'अभी तो झूम रही रात' आदि ऐसी कविताएं हैं जिनमें कवि की प्रणयानुभूति के दर्शन होते हैं। 'चूड़ी का टुकड़ा' कविता में कवि नायिका पत्नी जो उनकी प्रेमिका भी है के प्रति मिलनातुरता का वर्णन करता हुआ कहता है –

दूजकोर से उस टुकड़े पर
चढ़ने लगी तुम्हारी सब लज्जित तस्वीरें
सेज सुनहली
कसे हुए बंधन में चूड़ी का झर जाना
निकल गई सपने जैसी वे मीठी रातें।[2]

कहा जा सकता है कि 'रोमानी परिवेश की व्यंजना करने में कवि पूर्णत सफल रहा है। निजी अनुभूतियों का बिना किसी

दुराव–छिपाव के जैसा स्पष्ट चित्रण हुआ है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।[3] स्पष्ट है कि कवि प्रियतमा के साथ बिताए पलों का निःसंकोच वर्णन करता है। 'नाश और निर्माण' की यह पंक्तियां इस दृष्टि से उल्लेखनीय बन पड़ी है–'जब तुम पहली बार मिली थी / पीले रंग की चुनर पहिने देख रही थी चोरी – चोरी / मेरे मीठे गीत प्यार के मुख पर आंचल खींच लिया था जल्दी से निज चांद छिपाने।[4] कवि जीवन की स्वच्छ अनुभूतियों को व्यक्त करना चाहता है। इस संदर्भ में कवि का एक खास मंतव्य है कि विगत वर्षों में हिंदी कविता में यथार्थ के नाम पर फुहड़ता, असभ्यता, वीभत्सता, गजालत, आक्रोश और हिंसा आदि का ऐसा चित्रण हुआ है। कवि 'भीतरी नदी की यात्रा' संकलन की भूमिका में स्पष्ट लिखता है कि–'इस संकलन की कविताओं में मेरी व्यक्तिगत अंतरंग अनुभूतियों की कविताएं संकलित है। इसमें सौंदर्य और प्रेम संबंधी कविताएं हैं जो जीवन के मधुर पक्ष से संबंधित हैं, दूसरे प्रकार की रचनाएं प्रकृति से संबंधित है और कुछ कविताएं मेरी यात्राओं वैयक्तिकरण है। असलियत में जीवन की समस्त अनुभूतियों को मैं दो स्तरों पर भोगता रहा हूं। एक को मैं आत्मीय और व्यक्तिगत कहूंगा और दूसरे को सामाजिक। यह दोनों प्रकार की रचनाएं एक दूसरे की पूरक हैं क्योंकि मैं मानता हूं कि जीवन का अंतरंग भोग सामाजिक न्याय और स्वस्थ पक्ष के बिना संभव नहीं।[5] डॉ. नगेंद्र का कहना है कि 'नाश और निर्माण' काव्य संग्रह में संकलित कविताओं की आधारभूत अनुभूतियां अत्यंत सूक्ष्म होते हुए भी मूक और मांसल हैं। उनमें एक और छायावादी अतींद्रिय भावना का भाव है तो दूसरी ओर प्रगतिवाद की अनगढ़ स्थूलता भी नहीं है। 'धूप के धान' काव्य संग्रह तक आते–आते कवि की चेतना पूर्णता को प्राप्त कर चुकी थी। 'पृथ्वीकल्प', 'चंद्रमा', 'सांझ', 'युग', 'ढाकबनी' आदि इस संग्रह की महत्वपूर्ण कविताएं हैं। 'पृथ्वीकल्प' मानवतावादी भावना से ओत–प्रोत माथुर जी का एक सफल गीतिकाव्य है। आदिकाल से ही प्रकृति मानव की प्रेरणा स्रोत रही है। भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य साहित्य में प्रायः विश्व के समस्त कवियों ने मां प्रकृति के सौंदर्य का मुक्त कंठ से गान किया है। साहित्य में आदिकाल से लेकर अब तक संस्कृत एवं हिंदी के अनेकों कवियों ने प्रकृति के आलंबन और उद्दीपन रूपों का समुचित वर्णन किया है। मध्यकाल में कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, रसखान का साहित्य भी इस प्रकृति वर्णन से अछूता नहीं रहा है। आधुनिक काल में छायावादी प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी का काव्य वर्णन तो प्रकृति का अनुपम अनूठा उदाहरण है। माथुर छायावादी कवियों के प्रकृति वर्णन विशेषकर पंत से अत्याधिक प्रभावित हुए हैं। कवि माथुर के काव्य में ऐसे अनेक स्थल है जहां ढाक के जंगल भी है, ताड़ के वृक्ष भी है, काली मिट्टी के खेत भी हैं और खंजुरों के झुरमुट भी है। उन्होंने अपनी कविता में प्रकृति का जो वर्णन किया है वह देखते ही बनता है।

माथुर की नई कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर प्रमुख है। वे मुक्तकंठ से भारत माता का स्तुति गान करते हुए सहृदयों में देशानुराग की भावना जगाना चाहते हैं। कवि भारत के समृद्ध अतीत का गौरव गान करते हुए आशा जताता है कि शीघ्र ही देश से साम्राज्यवादी ताकतों का अंत होगा। कवि '15 अगस्त' कविता के माध्यम से राष्ट्रीय बोध जगाना चाहता है। वह कहना चाहता है कि आज अंग्रेज देश छोड़कर चला गया है, किंतु खतरे के बादल अभी भी मंडरा रहे हैं। विदेशी ताकते हमें निरंतर कमजोर बना रही हैं। कवि 'पंद्रह अगस्त' कविता के माध्यम से देश के युवाओं में नया जोश भरता है–

'आज जीत की रात
पहरुए सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नही मिट पाई दुःख की
विगत सांवली कोर।[6]

नए साल की 'सांझ', 'विजयदशमी' तथा 'इंदुमती' जैसी कविताओं में भी कवि की राष्ट्रीय चेतना मुखर हुई है। 'एशिया की आग' नामक कविता में कवि लिखते हैं –

''हो एक प्राण, को एक चरण, हो एक दिशा जनता निकले
इतिहास सूर्य के अश्व मुड़े, युग जीवन ने करवट बदली
नयनों में अग्नि शिखाएँ हैं, मुख पर मानवता का चंदन
जनता जनार्दन आज बढ़ी करने आजादी का बंधन।''

'बर्फ का चिराग' कविता में कवि चीनी आक्रमण की ओर संकेत कर बताना चाहता है कि चीन अपनी विस्तारवादी नीति के चलते भारत पर कुदृष्टि रखे हुए हैं। वह कभी भी भारतीय सीमाओं का अतिक्रमण कर सकता है। हाल ही के वर्षों में चीन ने भारत के लेह–लद्दाख में ऐसी शर्मनाक हरकत की है जिसका मुंह तोड़ जवाब भारतीय सेना ने दिया है।

आधुनिक हिंदी कविता में युगांतरकारी परिवर्तन हुए हैं। यह परिवर्तन आधुनिक हिंदी कविता की विषय वस्तु एवं अभिव्यंजना शिल्प दोनों में हुए हैं। गत शताब्दी के अंतिम वर्षों से लेकर आज तक की हिंदी कविता अभिव्यंजना शिल्प संबंधी अनेक प्रयोगों की लंबी श्रृंखला से गुजरी है। प्रयोगवादी कविता का शिल्प पक्ष पूर्णतः नवीन चेतना से संपृक्त है। माथुर इसका अपवाद नहीं है। उन्होंने अपनी काव्य भाषा को नया तेवर दिया है। माथुर की कविता में सर्वथा नवीन एवं मौलिक उदभावनाओं की सृष्टि हुई है। काव्य का अभिव्यंजना शिल्प काव्य के बाह्य तत्त्वों का समूह है। यह बाह्य तत्त्व क्या है? माथुर की कविता नए बिंब, नए प्रतीक, नए उपमान, छंद विधान और नई काव्य भाषा के लिए जानी जाती है, वस्तुतः यही काव्य के बाह्य तत्त्व है। गिरिजाकुमार माथुर ने प्रतीक अभिव्यंजना की एक सशक्त पद्धति को अपनाया है। उनके साहित्य विशेषतः कविता में प्रतीकों के प्रयोग की महत्ता असंदिग्ध है। कवि प्रतीकों की सहायता से कम शब्दों में अधिक वक्तव्य को प्रभावशाली ढंग से कह देता है। वास्तव में मनुष्य के अंतः एवं बाह्य जीवन परिवेश के अनेक रहस्य प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त होकर गोचर बन जाते हैं। नई कविता में पौराणिक प्रतीकों का ऐसा प्रयोग मिलता है जहां उनकी पौराणिकता अवशिष्ट है। कवि 'धूप के धान' काव्य संग्रह में ऐसे प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग करता है–

हो गया है फिशन अणु का
परम ब्रह्म अनादि मनु का
ब्रह्मा ने भी खूब बदला नाम

लोक हित में पर न आया काम।[7]

इन पंक्तियों में 'अणु का फिशन' प्रतीक नहीं बन पाया है बल्कि एक वक्तव्य बनकर रह गया है। पुरातन रूढ़ियों को तोड़ने की नई व्यक्ति की विवशता की प्रतीकात्मक अभिव्यक्त गिरिजाकुमार माथुर ने 'शंभू–धनु' से की है –

क्या करूं
उपलब्धि की जो सहज तीखी आंच मुझ में
क्या करूं जो शंभू धनु टूटा तुम्हारा
तोड़ने को मैं विवश हूं।[8]

'शीला पंख चमकीले' कवि की जीवन दृष्टि का परिचायक एवं उसी से उदभूत एक अनूठा प्रतीक है –

एक मन्वंतर बीत रहा है,
चमकीली शिलाएँ पंख फैलाकर उड़ गई है।[9]

उपर्युक्त पंक्तियों में प्रतीकों का जो रूप–अर्थ सामने आता है वह अंत तक अस्फुट ही रहता है। 'एक मन्वंतर बीत रहा है', लेकिन कुंठा देकर, मानवता के प्रति सारी आस्था मिटाकर। यथार्थ का यह चित्र क्या वास्तविक है? अर्थात नहीं। इस शंका का एकमात्र समाधान यही है कि कवि ने इस संकलन की अधिकांश कविताएं मानव भविष्य के प्रति आस्था और विश्वास से संबंधित होकर लिखी हैं। उसमें निराशा कि नहीं अनुभव से उत्पन्न तृप्ति जन्य परिपक्वता एवम् उल्लास की मुद्रा है जो कवि की संवेदनशीलता को प्रत्यक्ष करती है।

माथुर की कविता में बिंबों का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। उनके काव्य में अप्रस्तुत का चमत्कार तो है, किंतु कविता में अप्रस्तुत का जो प्रकृत कार्य होता है वह उसमे नहीं है। एक उदाहरण देखिए –

चांद पूरा साफ
आर्ट पेपर ज्यों कटा हो गोल।[10]

वस्तुतः माथुर की कविता में प्रयुक्त बिंब आधुनिक भाव बोध से संपृक्त हैं। वे औद्योगिक, यांत्रिक एवं पूंजीवादी समाज की अनुभूतियों को संवेद्य बनाते हैं। प्रयोगवादी अथवा नई कविता में परंपरागत अप्रस्तुत विधान लगभग गायब हो गए हैं। कवियों ने प्रयत्न पूर्वक नवीन उपमान जीवन–जगत के विभिन्न क्षेत्रों से खोजे हैं। अप्रस्तुतों के चयन के लिए वे बाथरूम से लेकर टाइपराइटर और फिर चूड़ी और क्लिप तक घूम आए हैं। गिरिजाकुमार माथुर के काव्य में इस तरह के बहुत से उपमान सुलभ है – जैसे स्वीटपी जैसा छोटा लान, क्लर्क की फाइल जैसी भारी आंखें, गेहूं की बाल जैसी धरा, झुके मेघों के समान झुके अधर, रूंधी हुई छाती– सा सूनापन, नई याद से भरे हुए टुकड़े जैसा रेडियो आदि। माथुर प्रयोगवादी कवियों में सर्वाधिक सजग एवं मुखर रहे हैं। उन्होंने मुक्त छंद का पूरा विधान रचा है। वर्णिक मुक्त छंद में भी वे कवित्त के विरामों को उनके रूपांतर सहित लेकर चले हैं। यह जरूरी नहीं है कि कवित्त के पूर्ण विरामों पर ही पंक्ति समाप्त हो वह अर्धविराम को भी शुद्ध मानते हैं। यहां तक कि उन्होंने सवैया के विराम पर आधारित मुक्त छंद का भी निर्माण किया है। प्रयोगवादी कवियों में उनका मुक्त छंद सबसे अधिक लयात्मक और संगीतात्मक है। मुक्त छंद में लयाधार के लिए उन्होंने हिंदी के अपने छंदों के अतिरिक्त उर्दू (शाम की धूप, नए साल की सांझ) गुजराती लोकगीत चांदनी गरबा आदि को भी अपनाया है। माथुर जी अपनी शिल्पगत नवीनता एवं प्रौढ़ता के लिए प्रसिद्ध हैं। ब्रज भाषा में काव्य रचना करने के उपरांत वह खड़ी बोली की ओर उन्मुख हुए। संगीतात्मकता, सहजता, सरलता, सादगी और ताजगी उनकी काव्य भाषा की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। कवि ने तद्भव तथा देशज शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। अपनी काव्य भाषा को अर्थ गौरव तथा उचित चमत्कार उत्पन्न करने के लिए उन्होंने यथासंभव लोक प्रचलित मुहावरॉ एवं लोकोक्तियां का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष : समग्रतः कहा जा सकता है गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवाद तथा नई कविता के श्रेष्ठ कवि हैं। उन्होंने काव्य के भाव पक्ष तथा शिल्प पक्ष को खूब सजाया संवारा है। माथुर जी का का प्रतीक विधान सर्वथा नवीन है। उन्होंने नवीन प्रतीकों के साथ–साथ सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा परंपरागत प्रतीकों का सफल प्रयोग किया है। नई कविता की रचना प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए माथुर जी ने अप्रस्तुतों का चयन करते समय मौलिक दृष्टि का परिचय दिया है। 'तार सप्तक' में विषय की अपेक्षा तकनीक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं– ''इसमें वैयक्तिक रूमानी भावना तथा युग जीवन का यथार्थ दोनों प्रकार की भावनाएं सम्मिलित हैं। अभिव्यक्ति की सहजता, चित्रोंपमयता तथा शालीनता है। वह न तो छायावादी कवियों की तरह दुरूह तथा अस्पष्ट है और न ही भोगवादी कवियों की भांति मांसल।'' वस्तुतः शिल्पगत नवीनता तथा भावगत सौंदर्यमयी चेतना के कारण वे अन्य प्रयोगवादियों से अलग ठहरते हैं। माथुर ब्रज भाषा में कविता लिखना आरंभ करते हैं, बाद में उन्होंने खड़ी बोली में परिनिष्ठित शब्दावली तथा तद्भव शब्दावली का प्रयोग किया है। निःसंदेह माथुर की कविता में बिंब, प्रतीक, उपमान, भाषा एवं छंद की दृष्टि से नवीन मौलिकता देखी जा सकती है यही उनके काव्य की शक्ति है।

– डॉ. ओम प्रकाश सैनी
(डी. लिट.) एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
आर. के. एस. डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

संदर्भ :

1. गिरिजाकुमार माथुर, काव्य संग्रह मंजीर, पृष्ठ संख्या, 69
2. गिरिजाकुमार माथुर, काव्य संग्रह, नाश और निर्माण पृष्ठ संख्या, 66
3. विजय कुमारी, गिरिजाकुमार माथुर, नई कविता के परिप्रेक्ष्य में, पृष्ठ संख्या, 57 4.गिरिजाकुमार माथुर, नाश और निर्माण, पृष्ठ संख्या, 62
5. गिरिजाकुमार माथुर, भीतरी नदी की यात्रा, भूमिका
6. गिरिजाकुमार माथुर,
7. गिरिजाकुमार माथुर, धूप के धान, पृष्ठ 73
8. गिरिजाकुमार माथुर, शिला पंख चमकीले, पृष्ठ 87
9. वही.पृष्ठ 5–7
10. गिरिजाकुमार माथुर, धूप के धान, पृष्ठ 88

महान जन नायक बिरसामुण्डा का शहीदी दिवस 9 जून

शत - शत नमन

छत्रपति राजश्री शाहू महाराज जयंति 26 जून

शत - शत नमन

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून

* जलवायु परिवर्तन के खतरों को झेलने वाली हम पहली पीढ़ी है। और वह आखरी पीढ़ी भी जो इसे रोकने के लिये कुछ कर सकती है।
* जंगल हमारी जमीन के फेंफड़े हैं, जो हवा को शुद्ध करते है। और हमे नई ऊर्जा देते है।
* हर पेड़ की एक कहानी है। कभी उन्हें काटा गया, कभी जलाया गया। कुछ लोगों ने छाल से औषधि बनाई तो पक्षियों ने पत्तों में घोंसले सजाए इसके बावजूद पेड़ संपूर्णता नहीं खोता। वह कभी देना बन्द नहीं करता।

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार